एक सफर में

Authors Tree®
PUBLISHING

एक सफर में

लेखक: **अंशुमन भगत**

प्रकाशक: **Authors Tree Publishing**

Authors Tree Publishing House
W/13, Near Housing Board Colony
Bilaspur, Chhattisgarh 495001
Published By Authors Tree Publishing 2021
Copyright © **Ansuman Bhagat 2021**
All Rights Reserved.

ISBN: **9789394807525**

प्रथम संस्करण: **2021**

भाषा: **हिंदी**

सर्वाधिकार: **अंशुमन भगत**

मूल्य: **₹ 449/-**

This book has been published with all reasonable efforts taken to make the material error-free after the consent of the Author. No part of this book shall be used, reproduced in any manner whatsoever without written permission from the Author, except in the case of brief quotations embodied in critical articles and reviews. The Author of this book is solely responsible and liable for its content including but not limited to the views, representations, descriptions, state-ments, information, opinions and references [“content”]. The content of this book shall not constitute or be construed or deemed to reflect the opinion or expression of the publisher or editor. Neither the publisher nor editor endorse or approve the content of this book or guarantee the reliability, Accuracy or completeness of the content published herein And do not make Any representations or warranties of Any kind, express or implied, including but not limited to the implied warranties of merchantability, fitness for a particular purpose. the publisher And editor shall not be liable whatsoever for Any errors, omissions, whether such errors or omissions result from negligence, Accident, or Any other cause or claims for loss or damages of Any kind, including without limitation, indirect or consequential loss or damage Arising out of use, inability to use, or About the reliability, Accuracy or sufficiency of the information contained in this book.

Authors Copyright Certificate and Book Clarifications by Publisher

1. This book has been published under self-publishing, therefore, all rights of the book will remain with Author Ansuman Bhagat only, not with publisher.
2. The copyright of this book is with the author (Ansuman Bhagat), Author Tree Publishing is the only publisher who has designed and listed this book on online book selling channels, and author can delist this book anytime and can be published with other publishers by author with different ISBN.
3. If there is any objection to the Contents of this book or any personal/organization name, then he will contact the author directly and the author will handle the legal proceedings, which will have nothing to do with the publisher.

So, this is an author’s copyright & legal agreement certificate for book contents and book clarifications by publisher, we hope that the author will not have used someone else's copyrighted material in this book, if done then the author will be responsible for it, which will have nothing to do with the publisher.

एक सफर में

अंशुमन भगत

लेखक के बारे में

अंशुमन भगत देश के उभरते हुए युवा लेखक हैं। झारखंड के जमशेदपुर में जन्में अंशुमन की गिनती बेस्टसेलिंग भारतीय युवा लेखकों में होती है। अब तक की लिखी गई इनकी तीन पुस्तकें हैं- योर ओन थॉट (2018), बेस्ट इंस्पिरेशनल कोट्स (2020) और आर्ट ऑफ मेकिंग साइड इनकम (2021)। अंशुमन को सबसे ज्यादा लोकप्रियता उनकी पहली किताब "योर ओन थॉट" से मिली। इससे इनको देशव्यापी पहचान मिली। अंशुमन की किताबें वर्ल्ड वाइड वेब पर बेस्टसेलिंग किताबों की श्रेणी में आती है। अंशुमन भगत ज्यादातर स्वयं सहायता प्रेरक (सेल्फ हेल्प मोटिवेशनल) किताबें लिखते हैं। यही वजह है कि वे तेजी से युवाओं के बीच लोकप्रिय हो रहे हैं। अंशुमन भगत के विचार केवल किताबों तक सीमित नहीं है बल्कि इनके विचार सोशल मीडिया पर भी काफी लोकप्रिय हैं, वे अपने विचारों को सरल और सुंदर भाषा में लिखते हैं जो सबकी समझ में आ जाती है। उनकी किताबें युवाओं को प्रेरित करती हैं। प्रेरणा पाकर लक्ष्य निर्धारित करना आसान हो जाता है और इससे आत्मविश्वास बढ़ता है। आज के समय में बहुत

कम युवा ऐसा कर रहे हैं कि वे दूसरे युवाओं को प्रेरणा दें। खासकर लेखनी की बातें करें तो मनोरंजन के दृष्टिकोण से किताबों की कमी नहीं लेकिन जब बात मोटिवेशन की आती है तब ये संख्या कम नज़र आती है। क्योंकि टेक्नोलॉजी के इस दबदबे के ज़माने में इंसान खुद से दूर होता जा रहा है और आने वाले समय में यह टेक्नोलॉजी हमारे जीवन पर हावी ना हो जाए इसलिए अंशुमन भगत अपने सार्थक प्रयासों से युवाओं के मन में सकारात्मकता भर रहे हैं जो आज के युवाओं के लिए बहुत जरूरी है।

सारांश

जब कोई व्यक्ति नींद में सपने देखता है तो ना जाने कितने सारे कैरेक्टर्स एक साथ दिखाई पड़ते हैं बिल्कुल वैसा ही जैसे हम सिनेमाघरों में मूवी देखते हैं। लेकिन क्या कभी वास्तव में वैसा होता है जैसा कि सोते वक्त हम सपने में देखते हैं? एक लेखक अपने विचार से काफी कुछ सोच कर लिखता है जो आजकल मनोरंजन के तौर पर देखा या पढ़ा जाता है। कभी-कभी वास्तविकता कुछ और भी होती है किन्तु जब सच में घटित काल को लोगों के सामने पेश किया जाए तो यह एक संदर्भ में समाज को आईना दिखाता है जिसके द्वारा बहुत कुछ अनुभव किया जा सकता है।

इस किताब **"एक सफर में"** में लेखक ने अपने जीवन के सभी घटनाओं को प्रदर्शित करने का प्रयास किया है जिससे लोगों को इस संदर्भ में ज्ञात होगा कि वास्तविक दैनिक दिनचर्या में कलाकारों या अन्य किसी भी व्यक्ति को किन-किन परिस्थितियों से होकर गुजरना पड़ता है और उसके द्वारा किए गए प्रयास से क्या परिणाम निकलते हैं। इस किताब से लेखक यह बताना चाहते है कि आजकल जो हम लोगों को कुछ करते हुए देखते हैं वह केवल एक

फॉर्मेलिटी (प्रचलित नियम) जैसा बन गया है जबकि लोगों के विचार एक दूसरे से काफी भिन्न होते हैं।

“**एक सफर में**, इस पुस्तक में मुंबई फिल्म उद्योग तथा आम कलाकारों के जीवन पर आधारित कई मुद्दों पर लेखक ने अपने तीन साल के अनुभव को दर्शाया है ताकि छोटे शहरों से आने वाले कलाकारों को मुंबई (मायानगरी) जैसे शहर की वास्तविकता और समस्याओं से अवगत करा सकें। सही मार्गदर्शन से कलाकारों को भटकाव के प्रति सचेत कर सकें। किताब में कई अहम बातें बताई गई हैं, जिससे हर युवा फिल्मी दुनिया की जानकारी हासिल कर अपने करियर को आगे बढ़ा सकता है। इस पुस्तक में हिंदू धर्म के दो महाग्रंथों रामायण और महाभारत में लिखे गए सबसे महत्वपूर्ण संदेशों का भी उल्लेख है कि ग्रंथों तथा भगवान श्री कृष्ण द्वारा बताए गए दिशा निर्देशों का जीवन में कितना महत्व है और उनसे ज्ञान अर्जित करके कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है।

उद्देश्य

लेखक अर्थात् लेखन कार्य करने वाला और लेखक कई प्रकार के होते हैं (जैसे—उपन्यास लेखक, समाचार लेखक, साहित्य लेखक, कविता लेखक इत्यादि) लेखक मनोरंजन, साहित्य, कविता, शायरी, विचार एवं जागरूकता और ना जाने कितने विषयों पर अपनी सोच को अपने कलम द्वारा लिख कर लोगों तक पहुंचाने का काम करते हैं इस किताब के माध्यम से लेखक अंशुमन भगत एक ऐसे बड़े तबके को अपने लेखन के जरिए समझाना चाहते हैं कि बॉलीवुड टीवी इंडस्ट्री आखिर है क्या और यहां कैसे सरवाइव किया जाता है?

यदि कोई लेखक वास्तव में अपने जीवन में घटित घटनाओं और उस क्षेत्र के अनुभव को जीया है और इस वास्तविक अनुभव को दूसरों तक पहुँचा सकता है, तो इससे बड़ी कोई बात नहीं हो सकती है, इसलिए यह भी कहा जाता है कि एक लेखक यूं ही लेखक नहीं होता। उसने जीवन को बहुत करीब से देखा होता है और जो देखा है उसे ही अपने लेखन के जरिए दुनिया के सामने पेश करता है।

हर कोई इस दुनिया को बदलना चाहता है, लेकिन कोई भी अपने भीतर बदलाव नहीं चाहता है। इस पुस्तक के माध्यम से लेखक अंशुमन भगत अपने लेखन के द्वारा लोगों में बदलाव की उम्मीद के साथ खुद में भी यह भावना रखते हैं और एक सच्चा लेखक वही होता है जो अपने लेखन से सत्य को उजागर करें। इस किताब के जरिए लेखक एक बड़े तबके तक अपनी बात पहुंचाना चाहते हैं कि इंडस्ट्री में नए लोगों की सोच विपरीत दिशा में जा सकती है अगर उन्हें सही रास्ता ना दिखाएं और यह राह ऐसा है, जहां आपको समझदारी से अपने कदम बढ़ाने पड़ते हैं, न जाने किस वक्त आपकी मुलाकात ऐसे व्यक्ति से हो जाए जहां आपका समय व्यर्थ हो जाएगा। इस इंडस्ट्री में समय की काफी महत्व है, समय के हिसाब से ही आप सफल या असफल बनते है लेखक ने इस बात पर भी जोर दिया है कि नए कलाकार समय को समझें क्योंकि समय को समझकर ही वह अपना रास्ता तय कर सकते हैं।

समय हमें सब कुछ सिखा देता है कि वास्तविक जीवन में हम क्या हैं? हो सकता है कि समय आपकी न सुने, लेकिन समय हमेशा आप पर नजर रखता है, वक्त बदलता जरूर है किंतु आपके जीवन में अच्छा या बुरा आपने जो किया है इसके अनुसार समय ही आगे आपको परिणाम देता है कि आपने अपने जीवन में क्या पाया है? और क्या खोया है? यदि आप समय का सदुपयोग करना जानते

हैं तो आपका समय सुरक्षित है, यदि आप सही समय का इंतजार करते रहेंगे तो वह कभी नहीं आएगा, लेकिन आपके कर्मों के अनुसार यह भी समय ही आपको महसूस कराता है कि आपका समय कैसा चल रहा है?

क्रम-सूची

1.	जीवन में ग्रंथो का महत्व	19-21
2.	अपना जमशेदपुर	25-27
3.	एक सफ़र में	31-41
4.	बदलते जीवन का रूप	45-50
5.	आपका संपर्क	53-56
6.	उम्मीद की किरण	59-62
7.	सतर्क	65-72
8.	अनुभव ही सब कुछ	75-80
9.	भ्रम की दीवार	83-89
10.	नशा और दिखावटी जिंदगी	93-98
11.	सकारात्मक सोच के साथ	101-105
12.	किताब का अंश	109-111
13.	जीवन में समस्याओं का आना	115-119
14.	लोभ का परिणाम	123-124
15.	सुख और दुखों का जीवन	127-129
16.	आपकी प्रतिभा	133-134

अगर आप खुद को तराशने की कोशिश करें तो यह आपको सफलता की ओर ले जाता है।

\- **अंशुमन भगत**

जीवन में ग्रंथो का महत्व

भारत ही नहीं बल्कि पूरा विश्व जानता है कि हिंदुओं के दो महाग्रंथ "रामायण" और "महाभारत" हैं जिन पर बॉलीवुड टीवी इंडस्ट्री में कई धारावाहिक शो बन चुके हैं और बनते आ रहे हैं। महाभारत के दौरान हुई कई घटनाएं हमें आज भी कई सीख देते हैं। जिसके माध्यम से हम आज के इस जीवन में भी बहुत कुछ सीख सकते हैं। आमतौर पर जिस प्रकार लोग अपने दैनिक दिनचर्या को जीते आ रहे हैं उसमें कहीं ना कहीं और कोई ना कोई समस्या आ ही जाती है जिस बीच हमारे मन में काफी सारे प्रश्न उठते हैं, कभी कभी तो ऐसा भी होता है कि हमें उस सवाल का जवाब ही नहीं मिल पाता। किंतु ऐसे में ग्रंथों से ही सही मायने में हमें जीवन के हर सवाल का जवाब मिल जाता है हम किस प्रकार स्वयं के अनुरूप अपने जीवन को दिशा मार्ग दे सकते हैं। यह भी महाभारत से पता चलता है।

भगवान श्री कृष्ण अगर चाहते तो महाभारत होता ही नहीं या उसे चुटकी में खत्म कर देते, किंतु धर्म और अधर्म के बीच की लड़ाई यह बहुत जरूरी थी। आज के समय में सही और गलत यह संदेश हमें महाभारत के द्वारा प्राप्त होता है इन महाग्रंथों से एक महत्वपूर्ण सीख यह भी मिलता है कि व्यक्ति को कभी अभिमान अर्थात घमंड नहीं करना चाहिए क्योंकि अभिमान के कारण व्यक्ति अपने सोचने समझने की शक्ति नष्ट कर बैठता है, ऐसे में स्वयं को दूसरो से श्रेष्ठ समझने लगता है और दूसरों को खुद से नीचा दिखाने की सोच, मन में पाल लेता है। किसी भी व्यक्ति के पराजय और असफलता के पीछे का सबसे बड़ा कारण यही होता है। इसलिए व्यक्ति को जीवन में कभी भी घमंड नहीं करना चाहिए।

अपना निर्णय अपने विवेक और संयम से लेना ही हमारे हित में है। खुद पर विश्वास करना बहुत जरूरी है। अगर हम स्वयं पर, अपनी क्षमताओं पर, अपने निर्णयों और योग्यताओं पर विश्वास नहीं करेंगे, तो जीवन में कभी भी सफल नहीं हो पाएंगे और इसके साथ जीवन में निरंतर संघर्ष भी करते रहना चाहिए, भले ही परिस्थितियां कैसी ही क्यों न हों, संघर्ष से हार मान कर नहीं बैठना चाहिए। सभी के जीवन में लक्ष्य का होना काफी आवश्यक है। लक्ष्य के बिना जीवन व्यर्थ के समान होता है। सही मायने में जीवन वही जीता है जो परिस्थितियों को बदलने का साहस रखता है और

अपना लक्ष्य निर्धारित करके अपनी राह खुद बनाता चला जाता है। आज के समय में सही और गलत यह संदेश हमें महाभारत के जरिए मिलता है। महाभारत अपने समय से लेकर आज के समय तक हमेशा एक प्रेरणा की घटना बनी हुई है। श्री कृष्ण द्वारा लिए गए फैसलों से महत्वपूर्ण बातों का ज्ञान होता है, जो आज के जीवन के लिए आवश्यक है।

अपना जमशेदपुर

इस पुस्तक में जमशेदपुर शहर का उल्लेख इसलिए नहीं किया गया है कि मैं (लेखक) भी जमशेदपुर शहर से ताल्लुक रखता हूँ। इसलिए किया गया है, क्योंकि यह ऐसा शहर है जहां की मिट्टी, वायु, जल, वातावरण हर एक में एक अलग ही एहसास होता है। जो दूसरे शहरों से बहुत अलग है। अगर भाषा की बात करे तो यहां पर अन्य राज्यों की तरह किसी एक भाषा का प्रचलन नहीं है। जो मुख्य रूप से जमशेदपुर को दूसरे शहरों से काफ़ी भिन्न बनाता है। यह शहर न केवल स्टील के लिए जाना जाता है, बल्कि यहां के लोगो में कला और अपने संस्कृति के प्रति काफ़ी ज्यादा लगाव है। इस वजह यहां से कई मशहूर हस्तियां हुए हैं, जमशेदपुर ने कई शख्सियतों को दुनिया के सामने रखा है, जिससे पूरे भारत और दुनिया में उनका गौरव बढ़ा है। जमशेदपुर के लोगो ने अपने संस्कृति और कला के इस धरोहर से अपनी छाप हर जगह तक छोड़ा है। इसी के साथ उद्योग के मामले में भी झारखंड हमेशा

आगे रहा है। जहां इस्पात और कोयले के जरिए देश की अर्थव्यवस्था को सहयोग मिला, जिसमे जमशेदपुर की भूमिका सबसे अहम मानी जाती है। जिसे मिनी मुंबई के नाम से भी जाना जाता है। और अगर फिल्मी जगत की बात करे तो जैसे ही यह शब्द आता है ~ **लाइट कैमरा एक्शन!!** तो इन शब्दों को सुन कर आपके मन में भी वही ख्याल आ जाते होंगे। जैसा किसी टीवी सीरियल या फ़िल्मों की शूटिंग को ले कर खयाल आते है यदि आप टीवी देखने के शौकीन रखते है।

जब कोई अपने सपनों को पूरा करने के लिए अपना कदम आगे बढ़ाता है तो ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे मानो आसमान में कहराते बादल, बारिशों की बौछार, खुली हुई मैदान और उस मैदान में एक छोटा लड़का, जो बादलों के खड़गडाहट के साथ कहराता हुआ, आंखो मे आंसू लिए, न कोई पास और न किसी अपनों का साथ। बस ख्यालों में एक ही बात होती है कि जीवन में कुछ करना है, जो आज नहीं हूं, जो आज सिर्फ लोगो के साथ भीड़ बन कर कहीं खो गया है इससे दूर, खुद की अपनी एक कहानी लिखनी है जिसे हर कोई जान सके और पढ़ सके। यह सारे विचार मन में आने लगते है।

लेकिन कुछ लोगो का ऐसा कहना होता है कि~

अभी तक क्या किया तुमने? आगे भी तुमसे कुछ नहीं हो पाएगा, बस इतना ही करना था? तुमसे कोई उम्मीद नहीं है? तुम्हे ये सब छोड़ देना चाहिए? अरे तुम कभी कुछ नही कर सकते!!

क्या इन बातों से आपको ऐसा लगता है कि आप जीवन में कभी कुछ नहीं कर सकते? जीवन में ऐसे बहुत लोग मिलते है और आगे भी मिलेंगे जो आपको हर राह पर ताने देंगे। लेकिन इन्हीं लोगों के वजह से हमारे मन में कुछ करने की सोच तेज़ी से दौड़ने लगती है यदि इसे साकारात्मक रूप में देखे। जीवन में लोगो से जितना कुछ सीखने मिला है शायद ही हमे किसी दूसरी चीज की जरूरत पड़े। इस लिए नई सुबह के साथ हमे अपने दिन की शुरुआत करनी चाहिए और मैने भी यही किया।

एक सफ़र में

एक नई शुरुआत और नई उम्मीदों की सोच से मुंबई आना मेरे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण घड़ी था। इस जगह आने के बाद ही मेरे अंदर बदलाव और कुछ और करने की उमंग जाग उठी और हो भी क्यों ना जिस शहर में दिन-रात का फर्क किए बिना लोग हमेशा व्यस्त रहते हैं। दिनभर भागदौड़ और ना किसी से मतलब रखे बिना अपना जीवन जीते हैं। उस वातावरण में आप कुछ किए बिना नहीं रह सकते या यूं कहें कि मुंबई का वातावरण आत्मविश्वास और हौसलों से भरा हुआ है। मैंने पहले सूरज की किरण के साथ ही अपनी शुरुआत की और मुंबई के सबसे प्रख्यात और स्ट्रगल वाले क्षेत्र में जाने का विचार किया क्योंकि मैं मुंबई कलाकार बनने आया था। फिल्म सिटी और कास्टिंग एजेंसी के दफ्तर ऑडिशन के लिए रोज आना जाना था। मैंने तब गौर किया कि मेरे जितने रोज अनगिनत आर्टिस्ट ना जाने कितने एजेंसी के चक्कर काटते हैं। मैं भी इन सब चीजों से परेशान था।

जब मैं मेरे मित्र के साथ हम एक चाय की टपरी (चाय की दुकान) पर चाय पी रहे थे। वहां चाय बेचने वाले आदमी ने मेरे मित्र से कहा ~ "बाबा जरा बाजू में बैठो दूसरा गिराहिक भी बैठेगा!"

तो मेरे मित्र ने कहा कि ~ मुझे थोड़ा समय लगेगा और बैठने दो मेरा ऑडिशन का नंबर आने वाला है।

तब उस व्यक्ति ने कहा~ "बंटा तू नवा-नवा है क्या मुंबई में? और इस लाइन में तू जिंदगी भर ऑडिशन देते रहेगा और तेरा कुछ नहीं होगा! तेरे जैसे लाखों लोग इस वास्ते आते हैं और पैसा देकर काम करवाते हैं"

मैं यह सब सुनकर काफी निराश हुआ और दुखी होकर घर गया और सोचा इस लाइन में मुझे काम नहीं करना, लेकिन ऐसा एक बार नहीं कई बार हुआ। फिर भी अपने सपनों को पूरा करने की चाह में मैं आगे बढ़ने की सोचा।

सपना यह एक ऐसा शब्द है जिसे सोच कर मन में सकारात्मक विचार आते हैं। सपने देखना और उसे सच करना यह भावना हर किसी के जीवन में कभी न कभी आते ही हैं, हर कोई चाहता है कि भविष्य में उसके पास वह सारी शान और शौकत हो जिसे पाने के लिए उसे उन सपनों को पूरा करना होता है, जो वह सोच रहा होता है। कुछ पूरे कर भी लेते हैं और कुछ के सपने अधूरे रह जाते हैं।

भारत देश में कई शहर है। उनमें से मुंबई एक ऐसा शहर है जिसके नाम के आगे ही **"सपनों का शहर"** लगता है और सच में यहां रहने वाले हर शख्स ने एक ऐसा वातावरण बनाया है जिससे हर व्यक्ति अपने सपनों को पूरा करने के लिए मुंबई आ सकता है।

मुंबई शहर, औद्योगिक सामाजिक एवं फिल्मी क्षेत्र के लिए अधिक जाना जाता है

यहां कई तरह की भाषाएं बोली जाती है और मुख्यता यहां की भाषा मराठी है। मराठी शब्द **"मराठा"** से पड़ा है। वहीं मराठा जिन्होंने अपने शौर्य एवं शक्ति का प्रदर्शन कर मुगलों को धूल चटाई थी। महाराष्ट्र शिवाजी महाराज जैसे सुर वीरों की भूमि रही है। वह वक्त युद्ध नीति का था, जिसमें महाराष्ट्र सबसे आगे रहा और अब का वक्त उद्योग और आर्थिक प्रतिस्पर्धा का है जिसमें महाराष्ट्र सबसे आगे हैं इसमें महाराष्ट्र के मुंबई शहर की भूमिका हमेशा अहम रहती है।

न जाने कितने लोग अपने घर परिवार को छोड़कर अपने सपनों को पूरा करने मुंबई आते हैं जिसमें सबसे जरूरी तो यह हो जाता है कि यहां के हिसाब से खुद को ढालना जो यहां का सबसे पहला पड़ाव होता है। किसी भी व्यक्ति के लिए यहां का वातावरण, यहां के लोग और यहां के खान पान से अच्छी तरह वाकिफ होना बहुत जरूरी है। यहां अच्छे लोग भी मिलेंगे और कुछ असामाजिक

तत्व जैसे ठगी करना, ट्रेन के सफर के दौरान लूटपाट, नशे यह सबसे बच कर रहना किसी भी व्यक्ति के लिए जरूरी हो जाती है। मुंबई जितना देना जानती है उतना लेना भी आप समय रहते खुद को इस वातावरण में ढाल पाए तो आप यहां रह सकते हैं। ऐसा इसलिए है कि जिस जगह जितनी सुविधाएं होंगी, उस जगह असामाजिक तत्वों का भी होना लाजमी है। यहां की फिल्मी दुनिया जिसे हर कोई अपना घर बनाना चाहता है। यही फिल्मी दुनिया जो आम इंसान को भी उस बुलंदियों पर ले जाती है जहां हर कोई पहुँचना चाहता है। इस क्षेत्र ने हमारे समाज को काफी कुछ दिया है। छोटे बड़े कलाकारों को रोजगार और भी अनगिनत लोगों को अपने क्षेत्र के अनुसार इस इंडस्ट्री ने रोजगार दिया है। लेकिन दोस्तों सिक्के के दो पहलू होते हैं। हमें वह दिखाया जाता है जो हम देखना चाहते हैं, क्या आपने सोचा है? कि किस तरह इस इंडस्ट्री में काम होता है? आज भारत में युवा कलाकार बनने इसी शहर मुंबई एक उम्मीद और अपनों को छोड़ कर आते हैं। लेकिन कुछ ऐसे लोग जिन्होंने इस इंडस्ट्री को बदनाम कर रखा है। वही लोग इन मासूमों के सपनों के साथ खेलते हैं। काम दिलाने के बहाने पैसे की मांग करना या किसी लड़की के साथ कॉम्प्रोमाइज का ऑफर देना। यह नीच हरकतें भी इस इंडस्ट्री का हिस्सा है ऐसा मानना गलत नही होगा क्योंकि इंडस्ट्री में कुछ ऐसे कास्टिंग एजेंसी और कुछ ऐसे

फर्जी लोग हैं जो कलाकारों से पैसा और काम दिलाने का वादा देकर मनचाही हरकतें करते हैं। ऐसे लोग सिर्फ कलाकारों की भावना के साथ खिलवाड़ करते हैं और सिर्फ छल करना जानते हैं जिस में न जाने कितने कलाकार फंसते हैं।

ऐसे लोग किसी भी तरह से आपको भी मिल सकते हैं। मेल आईडी द्वारा, व्हाट्सएप पर, फेक रिक्वायरमेंट डालकर एवं आपको फेक कॉल करेंगे कि आपका सिलेक्शन हो चुका है। कुछ लोग बड़े प्रोडक्शन हाउस का सदस्य बताकर नकली एग्रीमेंट बनाते हैं।

इस तरह के लोग सिर्फ एजेंसी खोल कर यूं ही ऑडिशन लेते रहते हैं कि कोई माने तो ठीक, वरना यह कह कर चले जाने को कह देंगे कि आपको काम मिल जाएगा।

सबसे बड़ी धोखाधड़ी तो वह करते हैं जो यह दावा करते हैं कि हम आपको एक्टिंग सिखाएंगे। एक्टिंग सीखी या सिखाई नहीं जाती। यह प्राकृतिक और इस क्षेत्र में रुचि रखने वाले हर उस व्यक्ति के अंदर होती है। बस यह लोग एक्टिंग के आड़ में मोटे-मोटे पैसे कमाने जानते हैं। जब तक हम समझदार नहीं बनेंगे। ऐसे लोग कभी खत्म नहीं होंगे।

हम में से ही कोई है जो इन्हें बढ़ावा देता है। जो शॉर्टकट तरीके से पैसे देकर इंडस्ट्री में काम करने की सोच रखते हैं।

पैसे देकर इंडस्ट्री में जगह बना लूंगा। ऐसे माइंड सेट बदलने की जरूरत है। तब जाकर यह इंडस्ट्री साफ होगी और काम उन्हें मिलेगा जो हकदार होगा।

"लगभग मेरी उम्मीदें टूट चुकी थी और मैं खुद से निराश था कि मैंने अपना काफी वक्त जाया कर दिया।"

कुछ वक्त के लिए मैं अपने रिश्तेदार के यहां न्यू मुंबई में रहने लग गया। कुछ महीने मन एकाग्र करने के बाद यह विचार आया कि कहीं जॉब करके अपनी जिंदगी चलाऊं और मैंने जॉब ज्वाइन कर लिया।

मैं घर से रोज सुबह 8:00 बजे निकलता और शाम 8:00 बजे घर आता। लगातार यह रूटीन करके ऊब चुका था। कहीं ना कहीं मेरे सपने अभी भी मेरे जहन में जिंदा थे। लेकिन कहीं उम्मीद ना मिल पाने के कारण हताश होकर बस वही कर रहा था, जो हालात मुझसे करवा रहे थे, अब मुंबई में रहना है तो खर्चा चलाने के लिए आमदनी का होना भी जरूरी है।

जब मैं पहली बार अपने सपनों को पूरा करने के लिए मुंबई **"सपनों के नगरी"** में आया तो मेरे अपने ही रिश्तेदार ने मुझसे कहा था कि "देख तू जहां से आया है न, वो तेरा गांव है, मुंबई सपनों की नगरी है और लोग अपने गांव से यहां अपने सपनों को पूरे करने ही आते है। जैसे तू आ गया इसलिए पहले कोई काम धंधा देख ले

फिर अपनी दुनिया में जीना।" अक्सर ऐसा सभी के साथ होता है लेकिन कभी-कभी ये बातें दिल में चुभने लगती है।

इसी बीच मुझे एक कास्टिंग एजेंसी से कॉल आया जो कि मेरे पुराने मित्र ही थे। उन्होंने मुझे अपने ऑफिस बुलाया। मैं समय निकालकर उनके ऑफिस गया, जो मुंबई के अंधेरी वेस्ट में स्थित है। वहां जाकर हमने काफी बातचीत की और उन्होंने मुझे सामने से प्रस्ताव दिया कि एक कास्टिंग डायरेक्टर के रूप में हमारे साथ काम करो।

उस वक्त मेरे समझ में कुछ भी नहीं आया, मैं बस एक ही बात को सोच रहा था क्या इस काम को करने से मैं इस इंडस्ट्री में अपने सपनों को पूरा कर पाऊंगा?

मैंने उन्हें यह बोलकर वहां से चला आया कि आपको सोचकर बताऊंगा और रात भर सोच कर यह फैसला लिया कि क्यों न किया जाए। इसी बहाने इंडस्ट्री से जुड़ा रहूंगा। मेरी रुचि इसी इंडस्ट्री में है और भले एक्टर नहीं लेकिन कास्टिंग में रहकर खुद को इंडस्ट्री से जोड़ कर रखूंगा।

इसी सोच के साथ मैंने कास्टिंग डायरेक्टर बन कर काम करने के लिए हां बोल दिया और ऑफिस आना जाना शुरू कर दिया।

शुरुआत में मेरा काम इतना था कि आए हुए आर्टिस्ट का ऑडिशन लेना है और उन्हें गाइड करना है कि किस तरह से ऑडिशन दिया जाता है और ऑडिशन के साथ-साथ डायलॉग डिलीवरी कैसे अच्छा करना है।

वहां मेरा मन लगने लगा और कुछ ही महीने हुए थे कि ऑफिस में एक लड़की ऑडिशन देने पहुंची। मैंने रोज की तरह ऑडिशन लेना शुरू किया। ऑडिशन लेने के द्बौरान बातचीत की और उसके बातों से मुझे पता चला कि कोई उसे कंप्रो (शारीरिक संबंध बनाकर काम करने का शॉर्टकट रास्ता) करने के लिए उकसा रहा था।

उस लड़की ने बताया कि "काम का लालच दिखाकर वह मेरे साथ कंप्रो करना चाहते हैं" इतना बोल कर ही उसकी आंखों में आंसू आने लगे और वह रोने लगी।

मुझसे देखा नहीं गया और मैंने उसे शांत कराया और बाहर लेकर गया। उस लड़की की बताई बात को लेकर मैं काफी गहरी सोच में चला गया। इस इंडस्ट्री के परदे के पीछे वाले जिंदगी के बारे में जानने लग गया कि कैसे इस इंडस्ट्री में कुछ असामाजिक तत्व है जो इस तरह की नीच हरकतें करते हैं और मुझे काफी कुछ पता चला।

इसी बीच में मैंने थोड़ा ब्रेक लेना चाहा और मैं वापस नवी मुंबई अपने रिश्तेदार के घर चला गया। वहां मैं अपने ही फैमिली के एक मित्र के साथ यहां वहां घूमता रहता था। एक दिन हम ऐसे ही टहल रहे थे, तो देखा कि कुछ लड़के आपस में बात कर रहे हैं और उनमें से एक लड़के की बोली और उसके व्यवहार ने मुझे काफी प्रभावित किया। कुछ देर बाद वह लड़का मेरे पास आया क्योंकि हम सामने ही थे और मुझे कुछ बताने लग गया।

हम दोनों एक दूसरे से बात करते-करते आपस में अपना संपर्क नंबर बदल लिए ताकि कभी फिर मुलाकात कर सके। उस दिन से हमारी दोस्ती हुई बस और क्या था, ऐसे ही मेरे जीवन में बालाजी मिश्रा ने अपना कदम रखा और यह मेरे जीवन का एक अहम हिस्सा है। बालाजी ने मुझे इतना प्रेरित किया कि मैं जो कर रहा हूं, वह मेरे लिए ठीक नहीं है। उसका कहना था कि एक्टिंग फील्ड में नहीं, मैं राइटिंग को अहमियत दूं। यह बात उसने मेरे जहन में भरी क्योंकि वह अच्छे से जानता था कि मैं लेखन में रुचि रखता हूं लेकिन फिर भी मैं लेखन के क्षेत्र में जाने के लिए नहीं सोच रहा था। बस सोच रहा था कि मैंने वह सारी जानकारी हासिल कर ली थी जो एक कास्टिंग एजेंसी की शुरुआत के लिए जरुरी होती है।

मैंने पहले बालाजी को इसकी जानकारी दी और इसे इस चीज के लिए मनाया और उसे अपने साथ शामिल कर लिया। मैं

रोज सुबह उठकर बालाजी के बिल्डिंग के नीचे खड़ा रहता और वह वहां आता।

हम मुंबई के अंधेरी वेस्ट जगह पर जाते और कैसे अपने काम को आगे बढ़ाएं। इसकी जानकारी हर उस शख्स से ले रहे थे जो इस इंडस्ट्री के करीब थे। करीब 1 महीने हम यूं ही रोज उठकर सुबह 8:40 की वाशी से लोकल ट्रेन पकड़कर कुर्ला और वहां से अंधेरी की ट्रेन पकड़ते। बालाजी के आने से मैं अब मुंबई में अकेला नहीं था। मुझ में और आत्मविश्वास बढ़ गया था। हम दोनों ने साथ मिलकर एस.के एंटरटेनमेंट एंड कास्टिंग एजेंसी की शुरुआत की और कुछ प्रोडक्शन हाउस के टाइअप के साथ हमने काम को आगे बढ़ाया।

हमने **"यह है मोहब्बतें" "नागिन 2" "नागिन 3" "परमावतार श्री कृष्ण"** क्राइम पेट्रोल जैसे प्रोजेक्ट के साथ कास्टिंग करनी शुरुआत की। हमारी इनकम कुछ इस प्रकार थी कि अगर कोई कलाकार को 10 दिन का काम देते हैं। उनके पेमेंट से 20% कमीशन हम रखते थे। जो कि 10 से 20000 रूपये के बीच होता था। हम ऐसा इसलिए करते क्योंकि हमें कोई डायरेक्टली काम नहीं मिलता था। हम थर्ड पार्टी की तरह यानी फ्रीलांसिंग काम करते थे। हमें यह पसंद तो नहीं था लेकिन कई चीजों के लिए पैसे भी मायने रखते थे। चाहे वह कहीं से भी आए, हमने 1 सालों में

काफी पैसे कमाए और हमने खुद की फोर व्हीलर ली, घर पैसे देते थे, जिससे कि लग रहा था कि हमारा जीवन खुशहाल है।

कुछ कास्टिंग एजेंसी यह सोच रहे थे कि इनके पास इतने रिक्वायरमेंट आ कहां से रहें, लेकिन उन्हें यह नहीं पता था कि यह मेरे पूरे डेढ़ साल के मेहनत थी। मैंने कई कॉन्टेक्ट्स बना रखे थे और मुझे कलाकारों के लिए कोई भागदौड़ नहीं करनी पड़ती थी। हमारे पास अकेले 35000 आर्टिस्ट के डाटा मौजूद थे। हमारे काम की स्पीड और बेहतर कास्टिंग को देखकर ही हमें इतने रिक्वायरमेंट्स मिल रहे थे। लेकिन शायद हमें किसी की नजर लग गई और एक ऐसी घड़ी आई कि हमें फिर से जीरो पर लाकर खड़ा कर दिया। मार्केट में कास्टिंग ना के बराबर होने लगी। फ्रीलांसिंग कास्टिंग ना के बराबर हो रही थी जिससे कि हमारे पास रिक्वायरमेंट नहीं आ रहे थे।

बदलते जीवन का रूप

मुंबई के फिल्म इंडस्ट्री ने इस देश को कई बड़े कलाकार दिए हैं। एक दौर था जब एक से बढ़कर एक नायक हमारे जहन में थे। अमिताभ बच्चन, राजेश खन्ना, दिलीप कुमार सुनील दत्त न जाने ऐसे कितने बड़े कलाकारों के बड़े बनने के पीछे की कहानियां हैं जो अपने समय में स्ट्रगल और अपनी मेहनत से ऐसा मुकाम हासिल किए थे, जिसे आज लगभग पूरा विश्व जानता है।

कलाकार तो हर किसी के अंदर होता है, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण कलाकारों की काबिलियत पहचानने के लिए एक ऐसा मंच होना भी जरूरी है जो कि मुंबई जैसे शहर ने सभी क्षेत्र के लोगों के लिए खुला रखा है, **"दादा साहेब फाल्के"** जिनके नाम से मुंबई फिल्म इंडस्ट्री की नाम रखी गई। आज उसी के आश्रय से ना जाने कितने कलाकार कल के समय और आज भी अपने सपनों को पूरा कर पा रहे हैं। इस इंडस्ट्री में टीवी धारावाहिक और बड़े पर्दो पर

काम करने के लिए हर कलाकार खुद को देखना चाहता है और हर चीज की यहां प्रक्रिया होती है जैसे ऑडिशन देना, कास्टिंग और डायरेक्शन आदि।

कई कलाकार को हमने देखा है कि काम ना मिल पाने के कारण वे निराश हो जाते हैं और हार बड़ी जल्दी मान लेते हैं लेकिन वह यह समझने का प्रयत्न नहीं करते कि काम उनके कैरेक्टर लायक नहीं था तो उन्हें नहीं मिला। वह उस रिक्वायरमेंट् के हिसाब से फिट नहीं थे। उन्हें यह समझना जरूरी है कि कौन सा काम उनके लिए सही है। कौन से रिक्वायरमेंट्स में वह फिट रह सकते हैं। कैरेक्टर के हिसाब से खुद को तैयार करके जाए। ऐसा भी हो सकता है कि आपने ठीक से ऑडिशन ना दिया हो, वहां कॉन्फिडेंस, डायलॉग की टाइमिंग और कैमरा फेसिंग देखा जाता है और कितना सही बोल रहे हैं। आपका यह सब ठीक है तो आप अपने मन के हिसाब से कुछ और भी जोड़ कर बोले तो उसमें कोई परेशानी नहीं होती। लेकिन कलाकार को यह समझना जरूरी हो जाता है कि आज उनके हिसाब से रिक्वायरमेंट्स नहीं आ रहे लेकिन कल आएगा। इसमें हार मान लेना और पीछे हट जाना, यह सोच खत्म करनी होगी।

इसलिए हमें वह चीज देखने नहीं मिल रही जो पिछले दौर में देखने मिले। हम यह नहीं देख रहे कि कोई इतनी मेहनत कर इंडस्ट्री में अपना नाम बढ़ा रहा है। आज के युवा शॉर्टकट तरीके से

खुद को इंडस्ट्री में देखना चाहते हैं। इसमें कुछ इंडस्ट्री के लोग भी शामिल हैं जो अपने पांव पसारे हुए हैं। अपने लोगों को काम देना ही उनकी प्राथमिकता बन गई है जिससे कि सबकुछ उन्हें बना बनाया मिल जाता है। इससे 'प्रतियोगिता' और 'हुनर' जैसे शब्द के लिए कोई जगह नहीं रही। इंडस्ट्री में यह सब देख कर कोई युवा जो पैसे के दम पर और पहचान से अपनी जगह इंडस्ट्री में बनाते हैं, उनकी ऑडियंस के सामने कोई कीमत नहीं रहती क्योंकि वह सच जल्दी सभी के सामने आ जाता है और जो स्ट्रगल और अपने मेहनत के बलबूते पर अपनी जगह बनाता है उसे हर कोई याद करता है और लोगों के लिए हमेशा सराहना का पात्र बना रहता है।

आज के युवा जो कलाकार बनने का सपना देखते हैं, उन्हें सच और झूठ के बीच का फर्क समझना होगा। अगर मेहनत और अपनी काबिलियत पर भरोसा नहीं तो ऐसे लोगों को इस इंडस्ट्री से दूर रहना चाहिए। अगर आपको खुद पर विश्वास है तो मेहनत करते रहो सफलता आपको जरूर मिलेगी। इसमें वक्त लग सकता है, लेकिन उस वक्त में धैर्य रखना ही आप की सबसे बड़ी परीक्षा है। कई लोग गलत रास्ते को अपना कर गलती करते हैं वह यह नहीं समझ पाते कि कहां जाना उनके लिए सही है। मुंबई मे कास्टिंग एजेंसी काफी है, लेकिन आपको जानना होगा कि किस एजेंसी के पास जाने से आपको काम मिल सकता है। अगर आप यह नहीं

समझेंगे तो आप बस ऑडिशन देते रहोगे। जीवन भर काम के इंतजार में आप समय बर्बाद करते रहोगे, एजेंसीज बस ऑडिशन लेकर खुद के डाटा को बढ़ाते हैं और वह सामने वालों को अपना डाटा दिखाकर उनसे पैसे की मांगे करते हैं।

यह लोग आपको ऐसा बता सकते हैं कि मेरे द्वारा इतने लोगों को काम मिला है और मेरे पास इतने आर्टिस्ट आते हैं। आपको बस जानना होगा कि क्या सही है क्या गलत। यह समझने के लिए आप सीनियर कलाकार जो होते हैं भले ही काम जूनियर एक्टर का करते हो या जाने-माने आर्टिस्ट उनसे जानकारी लेंगे तो वह आपकी मदद कर सकते हैं क्योंकि उन्हें यह सब की जानकारी होती है। कहां जाना ठीक होगा कहां नहीं, क्योंकि कई सालों से उन्होंने इस इंडस्ट्री में अपने पांव जमा कर रखे हैं।

सोशल मीडिया के जरिए भी कुछ आर्टिस्ट ऐसे विश्वास कर लेते हैं जिनका कोई आधार नहीं होता। एक सड़क छाप लड़का भी खुद को कास्टिंग डायरेक्टर बताकर आपका टाइम बर्बाद कर सकता है। फेक रिक्वायरमेंट्स और फेक कॉल से आपको संभल कर रहने की आवश्यकता है। आपका उत्साहित हो कर लिया गया कदम गलत भी हो सकता है। सही समय पर सही जगह देंगे तो हो सकता है आप सही राह पर आगे बढ़ जाए और आपको काम मिलना शुरू हो जाएगा। कोई भी काम छोटा बड़ा मत

समझिए,जैसा भी काम मिले उसे मना मत कीजिए, छोटे से छोटा काम से ही आपको अनुभव मिलता है और कुछ नया सिख पाते है, ऐसे ही किसी भी कलाकार की फेस वैल्यू बढ़ती है। काम मिलेगा ही नहीं यह माइंडसेट लेकर इंडस्ट्री में आप नहीं रह सकते।

100 में से 10 लोग तो आप की प्रतिभा को समझेंगे और उन 10 में से कोई एक आपको काम भी देगा। अब वह 10 पहले मिले या बाद में यह समय और आपकी मेहनत का खेल है, लेकिन हार मान लेना और शॉर्टकट तरीके से खुद को आगे बढ़ाना यह आप की सबसे बड़ी बेवकूफी हो सकती है। इसमें आप खुद के कैरियर और सालों भर की दी गई इंडस्ट्री के प्रति रुचि को बर्बाद कर सकते हैं फिर भी आपको लगता है कि आप इस तरह इंडस्ट्री मैं खुद को नहीं देख पाओगे तो जरूरी नहीं कि आप उस फील्ड को छोड़ दे, बल्कि इंडस्ट्री में कुछ और ट्राई करें। केवल एक्टिंग नहीं है। इस क्षेत्र में कई ऐसे काम है जिससे आपको स्टारडम मिल सकता है, फिल्म मेकिंग फोटोग्राफी, एडिटिंग, डायरेक्शन, राइटिंग और भी कई तरह के रास्ते इस इंडस्ट्री में खुले हैं। आपको अपने रुचि के हिसाब से हर चीज में कोशिश करते रहना चाहिए, वह वक्त भी आएगा। जब आपको वह सब मिलेगा जो अपने सोचा था। समय की समझ जिस दिन आपको हो गई, उस वक्त आपको यह भी समझ आ जाएगा कि किसी भी काम में देरी हो सकती है किंतु कुछ हाथ ना लगे, ऐसा

नहीं हो सकता। आपको उससे बढ़कर भी मिल सकता है, जब समय आप से इंतजार करवा रहा है तो समझ जाना चाहिए कि कोई बड़ी चीज आपका इंतजार कर रहा है।

और इस किताब के जरिए कास्टिंग से संबंधित कई विषयों पर ठीक से प्रकाश डालते हुए आप सभी को यह सब जानकारी देने का प्रयास इस लिए है कि ताकि आप भी अपने जीवन में सही दिशा की ओर कदम बढ़ा कर एक मुकाम हासिल कर लें। कास्टिंग किस तरह से होती है? कास्टिंग में क्या गलत होता है? और क्या सही? जिसे हर कोई नहीं जानता, उस पर्दे की पीछे की कहानी जानना उन सभी लोगों के लिए जरूरी है जो फिल्म इंडस्ट्री में किसी उम्मीद से आते हैं।

आपका संपर्क

हर क्षेत्र में लोग किसी ना किसी से सहारे की उम्मीद रखते है। इसी उम्मीद में रहते हैं कि कोई आपके पीछे हाथ रखकर आपको आगे बढ़ाने में आपकी मदद करेगा। ऐसा कोई भी सोच सकता है और हो सकता है कि आपने भी सोचा हो, लेकिन जब हकीकत में किसी को सहारा मिले तो उस रिश्ते को संभालना मुश्किल हो जाता है। अक्सर ये इंडस्ट्री में होता है कि लोग दूसरे की तरफ एक उम्मीद की तरह देखते हैं। सोचते हैं काश इनका सहारा मिले तो मैं आगे बढ़ पाऊंगा। लेकिन मुंबई की फिल्म इंडस्ट्री में बहुत ऐसे सच छुपा के रखे हैं जिसके चमक को सिर्फ लोग देख पाते हैं। उसके पीछे की गंदगी को, चमक से नहीं देख पातें है। मुंबई में आपके इंडस्ट्री के लोगो के साथ सही संपर्क का होना बहुत मायने रखता है। लेकिन किन से यह आप पर निर्भर करता है।

यहां महंगे कपड़े और अच्छे चश्मे पहन कर लोग खुद को डायरेक्टर भी बताते हैं और कुछ सड़क छाप लोग भी खुद को

डायरेक्ट या कास्टिंग डायरेक्टर बताने में कोई कसर नहीं छोड़ते हैं। यहां फर्क करना थोड़ा मुश्किल हो जाता है। और तो और कास्टिंग डायरेक्टर भले कम हो, लेकिन कास्टिक कोऑर्डिनेटर की तादाद काफी ज्यादा होती है, जिन्हें कास्टिंग का “सी” नहीं मालूम रहता रिक्वायरमेंट तो आपको बता देंगे। लेकिन प्रोजेक्ट किस प्रोडक्शन का है? और डायरेक्टर कौन है? यह नहीं बता पाएंगे। एक रिक्वायरमेंट के लिए यहां छह कोऑर्डिनेटर होते हैं। इन सबके चक्करों में पड़ कर आज के कलाकार जो मुंबई में नए आते हैं, वह काफी कंफ्यूज रहते हैं कि संपर्क किससे किया जाए। कुछ को ऐसे लोग मिल जाते हैं जो पैसे लेकर काम दिलाने की बात तो कहते हैं और खुद कहीं गायब हो जाते हैं। आपको यह समझना जरूरी है।

इस इंडस्ट्री में भटकाव कलाकारों की सबसे बड़ी समस्या है मॉडल्स का रिक्वायरमेंट डालकर यहां पब एक्टिविटी करवाते है, कैमियो बताकर क्राउड में काम करवाते है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि कुछ कलाकारों को कास्टिंग के बारे में नॉलेज नहीं होता और उन्हें गलत जानकारी मिल जाती है। अगर आप ऐसे संपर्क में अभी भी है तो यह आप पर निर्भर करता है कि समय रहते इन सब से बाहर निकल जाए। कई ऐसे मंच है जहां से सही कास्टिंग रिक्वायरमेंट मिलते है। कई एजेंसी है जो आज भी कलाकारों की प्रतिभा देखकर काम दिलाने में मदद करती है। बस समझना

आपको है कि आपको जाना कहां है? और किसके संपर्क में रहना है?

कई कलाकार तो इस भ्रम में भी रहते हैं कि अगर उनके पास आर्टिस्ट कार्ड नहीं होगा तो काम नहीं मिलेगा। कई एजेंसियां ऐसे धमका कर नए कलाकारों से कार्ड बनवा लेती है और अपना जेब भरती चली जाती है जोकि बिल्कुल गलत है। आर्टिस्ट कार्ड केवल कलाकारों की यूनिटी का माध्यम है जिसके कारण आपकी पहचान को उस कार्ड द्वारा समझा जा सकता है। या शूटिंग के वक्त आपके साथ कोई हादसा होता है तो उस कार्ड के जरिए इंश्योरेंस का भी प्रावधान होता है जिससे आपको मदद मिलती है, लेकिन यह सोचना गलत है कि आपको काम ही नहीं मिलेगा। मुंबई के इस इंडस्ट्री में अफवाहों से बच कर आपको काम करना सीखना पड़ेगा। तभी आप सही रास्ते में जा कर अपना सही अनुभव और ज्ञान को बढ़ा पाएंगे।

मुंबई में कहीं रहना भी स्ट्रगल की गिनती में आता है। अब कोई अकेला व्यक्ति कहीं रहना चाहता हो तो उसे कई जगह भागदौड़ करनी पड़ती है कई लोग काम की उम्मीद में अपना घर द्वार छोड़ कर आ तो जाते हैं लेकिन मुंबई में रहने योग्य घर यानी पीजी के लिए भी गलत व्यक्तियों से संपर्क कर बैठते हैं। आप Rs.3000 तक के मासिक किराया पर भी रह सकते हैं। लेकिन वहीं गलत व्यक्ति के

संपर्क में आने से आपको उस जगह Rs.5000 से Rs.6000 तक देना पड़ सकता है। कई ऐसे भी लोग मिलेंगे जो एडवांस में ले लेंगे और कहेंगे कल से रहने आ जाओ। वह खुद को रियल एस्टेट एजेंट बताकर आपसे मिल सकते हैं और अगले दिन गायब हो जाएंगे। अब आप मुंबई जैसे बड़े शहर में कहां उन्हें ढूंढोगे? इसलिए इस चीज में भी पूरी जानकारी के साथ ही आप रहने का प्रबंध करें, जिससे आने वाले समय में आप को दिक्कतों का सामना ना करना पड़े।

उम्मीद की किरण

बहुत से कलाकार ऐसे होते हैं जिन्हें काम तो मिलता है लेकिन मानसिक दौर से गुजर रहे होते हैं कि मेरी फेस वैल्यू बढ़ेगी या नहीं। मुझे और बड़ा काम मिलेगा या नहीं। इस विचार में वे डिमोटिवेट हो जाते हैं और कई डिप्रेशन के शिकार बनते हैं क्योंकि उनकी मानसिकता कुछ ऐसी हो जाती है कि वह ऐसा सोचते हैं कि उसने अपना सब इस इंडस्ट्री को दे दिया लेकिन इसके बावजूद भी कुछ बड़ा हासिल नहीं हो रहा। उन कलाकारों को यह भी सोचना चाहिए कि जब वे नए इस इंडस्ट्री में आए थे तब उनके पास कोई काम था? या फिर यह सोचे की आज जो लाखों लोग काम की तलाश में भटक रहे है जिन्हें कभी कोई काम ही नहीं मिला। क्या आप उनसे बेहतर स्थिति में नहीं है? या हो सकता है। आज आपके पास काम हो और कल काम ना के बराबर मिले। आपको जितना मिलता है उतने में संतुष्ट रहने की आदत भी डालनी होगी।

कलाकारों का जीवन शुरुआती दौर में कठिनाइयों से भरा होता है। धीरे-धीरे कलाकार जब कठिनाइयों को जीना सीख जाता है तब वह अपना मुकाम हासिल कर पाता है। कोई भी काम किसी भी क्षेत्र में आपकी मेहनत की परीक्षा ले सकता है।

"फल पकने में जिस तरह वक्त लगता है उसी प्रकार एक इंसान भी धीरे-धीरे सफलता की राह पर बढ़ता है और अपना मुकाम हासिल करता है।" हर फिल्म इंडस्ट्री में यही होता है। जब तक आप अपने जमीन को नहीं समझ लेते तब तक आसमान की ऊंचाई के बारे में सोचना भी गलत है। इंडस्ट्री का जीवन सफलता की सीढ़ियों की तरह है। हर सीढ़ी आपको कुछ ना कुछ सिखाएगी और बिना सीखे आप आगे नहीं बढ़ सकते। जिस क्षेत्र में आप है उस क्षेत्र की जानकारी रखना आपके लिए बहुत ही आवश्यक है जिससे आगे बढ़ने में कोई परेशानी नहीं होती। अन्य लोग जो फिल्म इंडस्ट्री के बारे में यह सोचते हैं कि यहां मेहनत नहीं होती, यहां सब कुछ आसानी से मिलता है, यहां पैसा काफी है। जी हां, फिल्मी दुनिया में नाम शोहरत दोनों है। लेकिन बिना मेहनत के यह आपको कभी नहीं मिल सकता। यहां सब कुछ आसानी से हासिल हो जाता है ऐसा कहना गलत है क्योंकि आप उन कलाकारों से पूछो जो एक कैरेक्टर के लिए कितने स्क्रिप्ट को पढ़ कर खुद को तैयार करते है उससे पहले की बात करे तो लाइन में खड़े रहना, कहीं

जाकर सिलेक्ट हुए तो शूट लोकेशन पर फिजिकली सब करना पड़ता है, जो एक मजदूर जितनी मेहनत के बराबर होता है। उन्हें अलग-अलग कॉस्ट्यूम्स जाड़े और गर्मी के हिसाब से पहनना होता है, और उसपर भी मेकअप, यह सब करने के बाद ही कोई कलाकार टीवी पर आपके सामने नज़र आता है। ऐसे लोग जो इस इंडस्ट्री के बारे में ऐसी सोच रखते हैं, वह गलत है और जो कलाकार भी इस फील्ड में खुद को यह समझता है कि मैं काफी टैलेंटेड हूं। मैं आसानी से सब कुछ हासिल कर सकता हूं। यह सोच भी गलत है क्योंकि आप जैसे लाखों लोग इस इंडस्ट्री में आने को तरसते हैं और यह सब चीज इतनी आसानी से नहीं मिलती। इंडस्ट्री में घमंड शब्द के लिए कोई जगह नहीं। आप नहीं तो कोई और सही इस भावना को लेकर काम करना ही सही है। आप यह सोचे कि अगर आप काम नहीं करोगे तो कोई और कर लेगा। कई युवाओं के कलाकार बनने का सपना बस सपनों की तरह ही रह जाता है। हो सकता है कि उसने सही से प्रयास ही नहीं किया हो या उनके संपर्क ठीक ना हो। ऐसे लोगों की मानसिकता यह हो जाती है कि खुद को अकेला महसूस करते हैं। सोचते हैं कि यहां मेरा कुछ नहीं हो सकता। कुछ समय में ही वह पीछे हट जाते हैं। हार मान लेते हैं। वाकई में मेरे साथ भी हुआ था जब मैं 2016 और 17 के बीच इस इंडस्ट्री में था। खुद को अकेला महसूस करने लगा और यह सोचने लगा कि मुझे

इंडस्ट्री से पीछे हट जाना चाहिए लेकिन आपको यह समझना जरूरी है कि बुरे से बुरा वक्त भी आ जाए लेकिन आपको धैर्य रखने की जरूरत होती है। कभी कभी जीवन में ऐसे लोग भी आ जाते हैं कि वह आपको आगे बढ़ने में आपको बहुत ज्यादा मोटिवेट करते है।

मेरे पीछे हटने के बाद ही बालाजी मिश्रा से दोस्ती हुई, जिसके सहयोग से मैं वापस इस इंडस्ट्री में आ पाया। उसने मुझे मोटिवेट किया और सहयोग किया। बालाजी ने हर वक्त मुझे यही समझाया कि जिस काम में रुचि है उसी काम को तब तक करो। जब तक कुछ हासिल ना हो जाए लेकिन आज के कलाकार पीछे हटने के बाद उस क्षेत्र से अपना नाता ही तोड़ देते है। इसका सीधा साधा यही परिणाम निकलता है कि चाहे वह किसी भी क्षेत्र से हो। उसे कभी उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिए। आपको उम्मीद की किरण उस वक्त तक जरूर नजर आएगी। जब आप उस क्षेत्र के प्रति अपनी रुचि बरकरार रखते हैं। सच्चाई यही है जब तक आप अपने मन में उस चीज को जिंदा रखेंगे तब तक यही उम्मीद रहेगी कि आप वहां कुछ कर सकते हैं। आपका दिल और आपका मन ही आपके सफलता की मुख्य कड़ी है। उम्मीद कभी नहीं छोड़नी चाहिए।

सतर्क

हमारे आसपास कई तरह के असामाजिक तत्वों का होना लाजमी है कोई भी क्षेत्र इससे मुक्त नहीं है। जब तक इंसान शोहरत का लालची रहेगा तब तक ऐसे लोगों की वजह से कमजोर एवं मेहनती व्यक्ति आगे नहीं बढ़ सकते। इस फिल्म इंडस्ट्री में कई लोग जो अपने टैलेंट और अपने मेहनत से कुछ करने की सोचते हैं तब ऐसे असामाजिक तत्व इन कलाकारों को बढ़ने नहीं देते क्योंकि वह उनकी मांगों को पूरा करने में सक्षम नहीं होते। ऐसे लोगों को टैलेंट नहीं सिर्फ नाम और शोहरत दिखता है।

ना जाने कितने प्रतिभाएँ इन जैसों की वजह से दब कर रह जाते हैं और हमें जिन लोगों को नहीं देखना, उन्हें मजबूरी में देखना पड़ जाता है लेकिन कहीं गलत है, तो कहीं सही भी। कई अच्छे लोग भी इंडस्ट्री में है जो शोहरत नहीं बल्कि टैलेंट की कदर करते हैं लेकिन अब यह भी कम होते दिखाई दे रहे हैं और आज के कलाकार अच्छे और बुरे में फर्क नहीं कर पा रहे हैं नए कलाकार बस अपने

सपनों को पूरा होते हुए देखना चाहते हैं उनके दिमाग पर हमेशा इसी चीज का भूत सवार रहता है इस तरह मगन होकर बुरे लोगों के बहकावे में आ जाते हैं और बाद में पूरी जिंदगी इंडस्ट्री को कोसते हैं।

यहां गौर करने वाली बात यह है कि कोई भी देश कोई भी क्षेत्र चाहे राज्य हो या छोटा शहर इनमें से कोई भी पूरी तरह भ्रष्टाचार से मुक्त नहीं हुआ है यह चीज आपको कब दिखाई देगी जब कोई आंदोलन चल रहे होंगे। ऐसी बुद्धिजीवी आपको हर जगह मिलेंगे, ऐसे में आपको सतर्कता से कार्य करना चाहिए।

मेरे आंखों देखी इस इंडस्ट्री की बातें बता रहा हूं कि कैसे लोग काम करते हैं एक घटना मेरे जेहन में आज तक है जिसके कारण मैं सोच में पड़ा रहता हूं और हमेशा कामना करता हूं कि ऐसा किसी और के साथ ना हो।

बात 2017 की है जब तीन लड़के ऐसे थे, जो लोगों को अपने जाल में फंसाते लेकिन उन्हें भी नहीं पता था कि वह खुद किसी के जाल में फंस रहे हैं यह तीन लड़के एक वक्त कलाकार बनने की उम्मीद लेकर एक साथ एक गांव से मुंबई शहर आए और वहां किसी प्रोडक्शन में ऑडिशन देने पहुंचे।

वहां के कास्टिंग डायरेक्टर ने उन्हें पैसे को लेकर बात की, कहा ~ "तुम मुझे इतने पैसे दे दो, मैं आपको काम दिला दूंगा आपको ही क्या आप तीनों को मैं कहीं ना कहीं काम लगवा दूंगा"!

यह बात सुनकर उन्होंने कहा कि सर "हमारे पास पैसे तो नहीं है अगर होते तो आपको जरूर देता" यह सब बातें हुई।

तब उस कास्टिंग डायरेक्टर ने उनसे कहा ~ "मैं आप लोगों को काम देना चाहता हूं लेकिन मेरी भी मजबूरी है, बिना पैसों के मैं काम नहीं दे सकता। आप लोग एक काम करो आप मेरे लिए काम करो जिसमें इज्जत भी मिलेगी और पैसा भी"

उन लड़कों की खुशी का कोई ठिकाना ही नहीं रहा और उत्साहित होकर बोले "जी सर बिल्कुल करूंगा लेकिन काम क्या है?"!

उस कास्टिंग डायरेक्टर ने कहा "आपको उन कलाकारों को ढूंढना है जो काम करना चाहते हैं और वह अपने काम के लिए पैसे भी लगाना चाहते हैं अगर उन्हें नहीं पता तो आप उन्हें पैसे के बारे में बताओ कि पैसे लगाकर भी इंडस्ट्री में काम मिलता है चाहे वह लाखों दे या हजार आपको सभी से बात करनी है पैसे के हिसाब से ही मैं काम दूंगा। ज्यादा पैसे ज्यादा लंबा ट्रैक, कम पैसे वनडे टुडे रोल, मैं यह सब करवा सकता हूं ऐसा बात करो"

उन सभी लड़कों को यह बात सही लगी और एक दूसरे से बात करते हुए उन्होंने कहा कि "चलो यारों कर लेते हैं मुंबई आ ही गए हैं तो क्या पता भगवान हमसे यही करवाना चाहते हैं क्या पता हम अमीर हो जाए और हम इनके लिए काम करेंगे तो यह हमें भी कुछ ना कुछ काम देंगे और मुझे तो कुछ गलत भी नहीं लग रहा

इतने बड़े कास्टिंग डायरेक्टर हैं ना जाने कितनों को काम दिला चुके हैं हम देख भी चुके हैं"!

उस कास्टिंग डायरेक्टर ने उन्हें आवाज देते हुए कहा "सुनो मेरे पास ज्यादा टाइम नहीं है आप बताओ क्या करना है तो मैं आपको आगे का काम बताऊँ" उन्होंने उनकी तरफ देख कर बोले "जी सर हम तैयार हैं आप हमें बताओ कैसे क्या करना है"!

उस कास्टिंग डायरेक्टर ने उन्हें एक होटल में बैठा कर समझाना चालू किया तभी एक लड़का उनसे बातें करते हुए पूछा कि "हमें यह लोग मिलेंगे कहा अगर मिलेंगे भी तो क्या गारंटी है उन्हें काम मिलेगा और वह हम पर विश्वास कैसे करेंगे कि हम उन्हें काम दे सकते हैं"!

तब उस कास्टिंग डायरेक्टर ने कहा कि "वह टेंशन मेरा है आप लोगों का नहीं उस कास्टिंग डायरेक्टर ने कहा मैं समझ सकता हूं कि थोड़ी बहुत हिचकिचाहट तुम्हें भी है और उन्हें भी होगी लेकिन फिर भी संतुष्टि के लिए हम एग्रीमेंट बनवा लेंगे जिससे उन्हें भी और ज्यादा विश्वास हो जाए और रही बात आपको कैसे मिलेंगे मैं आप लोगों को आर्टिस्ट के ग्रुप में ऐड करवाता हूं जहां लोग कास्टिंग रिक्वायरमेंट डालते हैं और आर्टिस्ट रिक्वायरमेंट पढ़कर आपसे कांटेक्ट करेंगे।

आपको मैं रिक्वायरमेंट दूंगा जिसे पढ़कर कलाकार आपको कांटेक्ट करेंगे उन्हें सब बताना है कि क्या प्रोजेक्ट है कितना

लंबा ट्रैक है है बस उन्हें समझाना है और पैसे के लिए मान गए तो उनसे पेमेंट ले कर मेरे पास आना है लेकिन ध्यान रहे प्रोडक्शन और मेरा नाम नहीं लेना है फिर भी अगर मेरा नाम ले लिए तो कम से कम लो और लेकिन प्रोडक्शन का बिल्कुल नहीं"!

उन सभी बंधुओं ने उनकी बातों को सुनकर काम करना चालू कर दिया और लोगों से बात करनी शुरू कर दी। कई दिन तक रिक्वायरमेंट डालकर लोगों से बात करने की शुरुआत कर दी। उनमें से दो कलाकार ऐसे थे जो पैसे देकर काम करने के लिए तैयार थे। उन्होंने इन कलाकारों को सारी बात समझा दी और उन्हें इस बात का विश्वास दिला दिया कि उन्हें काम 100% मिलेगा और उनकी फेस वैल्यू भी काफी बढ़ेगी। उन्होंने उन कलाकारों को एक-एक करके मुंबई बुलाया और सारे लेनदेन के बाद उस कास्टिंग डायरेक्टर से मुलाकात करवा दी और एग्रीमेंट देकर उन्हें कुछ महीने इंतजार करने को कहा।

वे कलाकार भी अपने काम की खुशी में अपना समय और अपने पैसे लगा दिए और अपने शहर को लौट गए। वह सभी बंदे अपने जिंदगी में बहुत खुश लग रहे थे लेकिन यही खुशी उनकी इस तरह गम में बदलने वाली थी कि इन्हें अंदाजा नहीं था। उन सभी कलाकारों ने महीने भर के इंतजार के बाद इनसे संपर्क करना चालू कर दिया और यह लड़के उस कास्टिंग डायरेक्टर से और वह उनके कभी कॉल या मैसेज का रिप्लाई नहीं देता था और कभी दे भी दे तो

उन्हें और कुछ दिनों इंतजार करने के लिए कह देता अब इन कलाकारों को असुरक्षा का अनुभव हुआ और उन्हें लगातार संपर्क करने लगे और इन्हें बात समझ आएगी उन्हें फंसाया गया है। इस तरह की घटना सिर्फ यही नहीं हर क्षेत्र में होती है वह कलाकार काम की लालच में अंधे थे और कास्टिंग डायरेक्टर पैसों के। इन सब चीजों में नुकसान उन लड़कों और कलाकारों का हुआ। ऐसे लोग कहीं भी आपको मिल सकते हैं किसी भी रूप में हो सकता है। आपको उनकी बातों पर यकीन हो जाए लेकिन आप यह सोच कर चले कि मुझे दे कर कुछ पाना नहीं है मुझे अपने हुनर के बदौलत आगे बढ़ना है।

अब इस घटना में वे कलाकार सिर्फ एक कास्टिंग डायरेक्टर को नहीं बल्कि पूरी इंडस्ट्री को फ्रॉड के नजर से देख रहे होंगे लेकिन ऐसा नहीं है अधिकतर लोग अच्छे हैं केवल कुछ लोगों की वजह से इंडस्ट्री बदनाम है बस आपको अच्छे बुरे में फर्क करना आना चाहिए।

अब आप इसमें कैसे फर्क करेंगे? अगर आप सोशल मीडिया पर कोई रिक्वायरमेंट देख कर कॉल पर बात करते हैं तो जरूरी नहीं कि वह कास्टिंग डायरेक्टर हो, हो सकता है वह किसी थर्ड पार्टी की तरफ से हो यानी कोऑर्डिनेटर हो। आप उनसे सारी जानकारी ले आपको लगे यह जेनुइन रिक्वायरमेंट है तभी आप ऑडिशन के लिए पहुंचे। किसी अखबार या स्टेशन के पास के

चिपके किसी स्टीकर को पढ़कर नहीं। वे लोग आपसे सिर्फ मिलने बुलाएंगे और आप को बहका कर आपका समय बर्बाद करेंगे।

आप सोचते होंगे कि यह लोग सब कैसे कर लेते हैं? इन्हें रोकने वाला कोई क्यों नहीं? ऐसी बात नहीं है इन्हें रोकने के लिए कई लोग हैं लेकिन ऐसे केसेस इतने होते हैं कि सभी को ढूंढ पाना मुश्किल है और भी कई ऐसे देश में मुद्दे हैं जिन पर ज्यादा गौर करने की आवश्यकता है सिर्फ उनकी गलती नहीं है, गलती कलाकारों की भी है क्या वे कलाकार कोई बच्चे हैं? जो किसी के भी बातों में आ जाए। उनमें भी लालच होती है और गलत तरीके से काम की उम्मीद रखते हैं जितना अपराध कोई फ्रॉड करता है उतना ही कलाकार भी। अगर ऐसे लोग ही ना करें तो उन जैसे लोग ही नहीं रहेंगे। हम में से ही कोई है जो इन्हें बढ़ावा देता है। आप को समझदार बनने की जरूरत है यह जाल पूरी तरह फैला है यह इतना फैला हुआ है कि बस ऐसे लोग इंतजार करते हैं कि कोई कलाकार इस जाल में फंसे।

यह पूरी तरह "स्कैम है एक बड़ा स्कैम।

इसे कोई एक आदमी ना कर रहा हो लेकिन इसे स्कैम कहना गलत नहीं होगा और इस स्कैम में वे सभी शामिल हैं जो शॉर्टकट तरीका अपनाते है और अपने काम की उम्मीद रखते हैं। अब तक का सबसे बड़ा स्कैम कास्टिंग स्कैम है। यहां पर अपने स्टैंडर्ड के हिसाब से सभी की मांगे होती है केवल एक दो नहीं करोड़ों की

तादाद में ऐसे कलाकार काम करने की उम्मीद से इंडस्ट्री में कदम रखते हैं उनमें से कई लाख लोग इन जैसों के जाल में फंसते हैं

अगर आप में हुनर है तो आप के हुनर के बदौलत काम पाइए। जरूरी नहीं आप अपना पोर्टफोलियो बनाकर खुद को इस के योग्य बताएं। आपका हुनर ही आप की सबसे बड़ी पहचान है कास्टिंग काउच को लेकर कई लोग बोलते हैं कई लोग उंगली उठाते हैं लेकिन आज तक यह मुद्दा ऐसा नहीं बना कि इंडस्ट्री में बदलाव किया जाए। लेकिन जब कलाकार इस बारे में सोचेंगे और बात करेंगे हो सकता है कि इस पर लोगों का ध्यान जाए। ऐसी मुहिम चलाए, जिससे इंडस्ट्रीज साफ हो, ऐसा कदम उठाए, जिससे हर कोई यह सोच सके कि इंडस्ट्री में इन्वेस्टमेंट कर नहीं अपना टैलेंट दिखाकर एंट्री ले सकते हैं। तब जाकर इंडस्ट्री साफ-सुथरी होगी।

अनुभव ही सब कुछ

आज इस बॉलीवुड ने कलाकारों के लिए कई मार्ग खोल रखे हैं लेकिन कई ऐसे कलाकार होते हैं जो आर्थिक रूप से कमजोर होते हैं उनकी क्षमता नहीं कि किसी कोचिंग या अकादमी में एडमिशन ले। उनका भी यह सपना होता है तो क्या वह कलाकार नहीं बन सकते? वह भी इंडस्ट्री में कलाकार के रूप में काम कर सकते हैं इसका सीधा मतलब एक्टिंग कोर्स से होता है वहां बहुत से चीजें सीखने जाते हैं यह सोच कर कि अच्छे एक्टिंग कोर्स में कोचिंग करने से आपका एक अच्छा पोर्टफोलियो बनेगा और इससे आपको भविष्य में काम मिलेगा तो यह भ्रम दूर करने की जरूरत है।

आज के युवा इस क्षेत्र में बहुत ज्यादा रुचि रखते हैं आज लगभग काफी कलाकार एक्टिंग इंस्टिट्यूट पर निर्भर हो गए हैं उन्हें यह नहीं पता कि वास्तविकता क्या है? कई कलाकार भ्रम में रहते हैं कि एक्टिंग कोर्स करने पर ही काम मिलेगा और एक तरह से

प्लेसमेंट मिलने की आश लगा बैठते हैं हम अपने जीवन में काफी कुछ सीखते हैं कुछ नया सीखना हो तो क्षेत्र के हिसाब से इंस्टिट्यूट जाते हैं बात एक्टिंग की करें तो एक्टिंग फील्ड में कई सारी ऐसी बातें हैं जो एक नए कलाकार के लिए एकदम नया सा है जैसे कि कैमरा, फ्रेमिंग, लाइटिंग, फ्रंट शोल्डर सूट, बैक शोल्डर सूट, डायलॉग, टाइमिंग, एक्सप्रेशन, यह सब चीज किसी कलाकार में यह गुण पहले से होते हैं कुछ क्लासेज कर के सीखते हैं तो कुछ काम करते-करते सीख जाते हैं।

जो कलाकार बनना चाहते हैं और उन्हें अभिनय का ज्ञान नहीं है वह ऐसे इंस्टिट्यूट का सहारा ले सकते हैं या कोई भी कलाकार जिन्हें ज्ञात हो वह भी कुछ सीखने के मकसद से कोचिंग ले सकते हैं। लेकिन उम्मीद लगाना कि वहां जाकर ही मुझे काम मिलेगा यह सही नहीं है क्योंकि वह आप पर निर्भर करता है कि आप जितना ज्यादा सीखेंगे, जितना ध्यान देंगे, आपका अभिनय में निखार उतना ही आएगा।

कुछ लोग यह भी सोचते हैं कि शरीर और शक्ल से इस इंडस्ट्री में जगह बन जाता है वह भी गलत है एक कलाकार को उसके कैरेक्टर के हिसाब से काम मिलता है। चाहे आप कैसे भी दिखते हो, इस से कोई मतलब नहीं है। आपको काम मिलेगा, अगर आप में अभिनय करने की कला है। हमारे इंडस्ट्री में ऐसे बहुत से

उदाहरण है जिनसे हमें प्रेरणा लेनी चाहिए आप बात करें नवाज़ुद्दीन सिद्धकी, मनोज त्रिपाठी, इरफान खान, राजकुमार राव, अमिताभ बच्चन और ना जाने कितने कलाकार क्या यह सब बॉडीबिल्डर या ज्यादा खूबसूरत दिखने की वजह से इंडस्ट्री में है? बिलकुल नहीं। इन्हें अपने अभिनय के बलबूते काम और नाम मिला है।

हमारे समाज में श्वेत, अश्वेत, फिट और अनफिट को लेकर अक्सर बातें होती है जो अच्छा है उसे शरीफ और जो नहीं उन्हें ताने। यही सब सोचकर लोग निराश होते हैं और किसी भी क्षेत्र और किसी के सामने तक जाने से शर्माते हैं, लेकिन इन जैसों में अगर अभिनय की कला है तो इनके लिए इंडस्ट्री के द्वार हमेशा खुले हैं यहां सिर्फ टैलेंट की कदर है।

अक्सर हम टीवी पर कई कलाकारों को देखते हैं जिन्हें हम देखना नहीं चाहते क्योंकि आपको उनका लुक पसंद नहीं आता लेकिन अगर आप एक कलाकार है तो आपको उसके चेहरे के पीछे उनकी अभिनय की प्रतिभा दिखाई देगी। जिसकी वजह से वह कलाकार टीवी पर है। आप उनके अभिनय करने की कला पर प्रभावित हो जाते हैं और उन जैसों से प्रेरणा लेते हैं। कोई भी इंसान अपनी प्रतिभाओं से जाना जाता है ना कि अपने रंग रूप से। यह रंग रूप प्रकृति की देन होती हैं, अभिनय आप सीखते हैं आपकी खूबी आपके सीखे हुए गुणों से उभरती है। अभिनय ऐसा हो जिससे सब

वास्तविक लगे, तब आपके रंग रूप से ज्यादा आपके गुणों के दर्शक कायल हो जाएंगे।

कई लोग इंडस्ट्री में ऐसे होते हैं जो करना कुछ और चाहते हैं और कर कुछ और रहे होते हैं इंडस्ट्री में केवल एक्टिंग ही नहीं बल्कि ऐसे कई क्षेत्र हैं जिनमें लोगों का काफी नाम हुआ है कोई डायरेक्शन में जाता है, कोई राइटिंग करता है, तो कोई कोरियोग्राफर बनने आता है लेकिन अक्सर देखा गया है, वह लोग अपना क्षेत्र छोड़कर किसी और के भ्रम में आ जाते हैं क्योंकि इंडस्ट्री में कई सारे विकल्प है और भी कई अन्य लोग इंडस्ट्री में रहकर अपने अंदर की कला को पहचान कर उसका सही चयन कर लेते हैं। तभी आपको देखने मिलता होगा कि कई एक्टर एक्टिंग के साथ-साथ राइटिंग डायरेक्शन भी कर लेते हैं और उन्हें एक्टर, राइटर, डायरेक्टर के रूप में जाना जाता है। इंडस्ट्री में आने से पहले जो कलाकार सोचते हैं उसके अलावा भी बहुत से स्कोप आपको इंडस्ट्री में दिखेंगे। लोग यहां सिर्फ एक्टिंग के लिए नहीं आते, बॉलीवुड में उन्हें मालूम होता है कि कई रास्ते हैं जिनसे नाम और शोहरत कमाया जा सकता है। जिससे वह किसी एक चीज पर निर्भर नहीं रहते और हर चीज में प्रयास करते हैं और हमेशा सीखते हैं । सीख हमारे जीवन में काफी आवश्यक है, हमेशा कुछ सीखने का प्रयास करें। सीखने का कोई अंत नहीं, आप जितना सीखोगे उतना ज्यादा

सफलता आपके जीवन में हासिल होगी। हम सीख कर पैदा नहीं होते, हमें जीवन की सच्चाई और अनुभव धीरे-धीरे सीखना पड़ता है आप किसी से प्रेरणा जरूर लें लेकिन रास्ता खुद तय करें। उनसे कुछ सीखने का प्रयास करें एक वक्त आएगा यही सीख आपके जीवन में काफी काम आएंगे। अगर हम खुद को यह समझे कि यहां मैं ज्ञानी हूं तो आप जीवन की दौड़ में काफी पीछे हो जाएंगे। सीखने से कोई उतार-चढ़ाव आपको आगे बढ़ने से नहीं रोक पाएंगे । आप अपने कठिन समय और अपनी की गई गलतियों से सीखे कि मुझे क्या करना है? किस कारण यह गलती मैंने किया।

हमेशा ध्यान रखिए कि सफल व्यक्ति भी अपने जीवन में और सीखने का प्रयास करता है, भले आज के समय में वह उच्च शिखर पर है लेकिन वह कल के लिए हमेशा तैयार रहता है उसे उसकी सीख ही मदद देती है और फिर उठ खड़े होने में सहायता करती है। आपका जीवन वैसे आपको काफी कुछ सिखाता है और सिखाता रहेगा। वह आप पर है कि आप जीवन से कितना सीखोगे क्योंकि आपकी सीख आपके जीवन की महत्वपूर्ण चीज है। असफलता आपकी राह में आयेंगी लेकिन आप उस सफलता के पीछे के कारण को जानने का प्रयास करते हो तो आप निश्चित तौर पर सफलता हासिल कर लोगे।

आप क्या हो? आप क्या कर सकते हो? यह सिर्फ आप ही जानते हैं आपको अच्छी तरह सिर्फ आप जानते हैं! आपको चोट लगे तो दर्द भी आपको ही होगा इसलिए अपने राह का साथी सिर्फ आप ही बनिए। खुद को सुनिए, आप को आपके लक्ष्य तक आप ही ले जा सकते हैं। ज्ञान एक महासागर की तरह है जिसकी गहराई अनंत हैं आप जितना सीखो उतना कम है। इसलिए जब तक हो सीखते रहे, बिना ज्ञान के कोई महान नहीं होता। जिसे सीखना आता है उसे बढ़ना भी आता है सीख ही आप को महान शख्सियत का रूप दे सकता है।

भ्रम की दीवार

इस बात का उल्लेख यह पुस्तक में पहले किया गया है कि इंडस्ट्री देता भी है और हम से कुछ लेता भी है अगर आप समझदार व्यक्ति हैं और सही राह पर है तो आपको इंडस्ट्री केवल देगा। अगर आप गलत राह पर है किसी से उम्मीद रखते हैं कि मुझे काम मिलेगा, तो इंडस्ट्री में बैठे कुछ लोग आपसे बस लेंगे, आपका समय और बहुत कुछ।

यहां हर कदम पर आपको चौकन्ना होकर कदम बढ़ाना है भ्रम से बच कर रहना है क्योंकि इस इंडस्ट्री में भ्रम और विश्वासघात जैसी चीजें मुमकिन है अगर आप समझदार नहीं है क्योंकि आजकल के युवा भ्रम में दुनिया घूम रहे हैं उन्हें वास्तविक जीवन में कोई इच्छा नहीं रहती और भ्रम में अगर कोई व्यक्ति आ जाता है तो उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है भ्रम हमेशा आपको गलत राह की ओर ढकेलता है जिस राह पर भ्रम का सहारा लेकर लोग आगे बढ़ते हैं उसी रास्ते के छोर पर विश्वासघात आपको दिखाई देगा।

कोई भ्रम में जा रहा है तो इसका अर्थ ही यही है आपके साथ विश्वासघात होना तय है यहां मुंबई में सभी पैसे कमाने आते हैं कोई मेहनत से, तो कोई शॉर्टकट तरीके से, यह शॉर्टकट वाले लोग इस इंडस्ट्री में भी है,। हर क्षेत्र में आपको ऐसे लोग मिलेंगे जहां जितनी सुविधाएं होंगे वहां ऐसे लोगों का होना लाजमी है। समझो ऐसा कि इस फिल्म इंडस्ट्री में किसी पर विश्वास करना अच्छा है लेकिन ना करना और भी अच्छा है। आप अगर इस इंडस्ट्री में नए हैं और यदि आप को नहीं समझ में आता की कौन मेरे लिए सही है? और कौन गलत? तो इससे बेहतर कि आप अकेले चले। बिना किसी पर विश्वास किए। अपने स्वयं की राह पर बढ़े क्योंकि जहां विश्वास है वहां विश्वासघात भी है।

अगर आप किसी गलत व्यक्ति के संपर्क में आते हैं तो जीवन भर इसी इंडस्ट्री को कोसेंगे। आप खुद गलत थे यह कभी नहीं मानेंगे कि गलती मेरी थी मैंने इतना भरोसा किया। आप जैसे कुछ समझदार व्यक्ति फँसते हैं, वहीं दूसरी ओर तो न जाने कितने कलाकारों को यही इंडस्ट्री काम देता है क्योंकि वह यह सब से बचकर रहते हैं। यह फिल्म इंडस्ट्री तो केवल एक मंच है जिसके सहारे आपको काम करने और सीखने का मौका मिलता है, उसे कोसना ठीक नहीं। कैसे इनके भ्रम से बचा जाए, कैसे इन लोगों की

पहचान की जाए। यह आपको कोई व्यक्तिगत रूप से बताने नहीं आएगा, आप खुद महसूस करें वह चीज आख़िर क्या है?

भ्रम इस फिल्म इंडस्ट्री की सबसे बड़ी समस्या है यहां कुछ लोग ऐसो की तलाश में होते हैं जो बिल्कुल नए हो और इस इंडस्ट्री में काम करने के मकसद से आए हो। आप को भ्रमित करेंगे कि कैसे आपको वह उस मुकाम तक पहुंचाएंगे जहां लोग मेहनत करके भी नहीं पहुंचते हैं। आपकी राह को भटका देंगे क्योंकि राह सब की सही होती है लेकिन उस राह में मोड लाने का काम यह भ्रमित करने वाले व्यक्ति ही करते हैं। इंडस्ट्री में अच्छे मुसाफिरों को भी राह भटकते देखा गया है तो आप तो फिर भी नए है। फिर आप कैसे बचेंगे? ऐसे लोगो के झांसे में अगर आप आते हैं तो आपको कोई बचाने नहीं आ सकता। आप खुद को इन सब चीजों से बचा कर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहना है।

सभी राहों की मंजिल आपका इंतजार बेसब्री से करती है वह राह सफलता का है या विश्वासघात का यह समझना आपका काम है और यह सब सभी के सामने होता है कुछ लोग अनजान बनकर इन जैसों के बहकावे में आ जाते हैं वह लोग आपको इस तरह कोशिश करेंगे कि आप जाने अनजाने भी उनकी बातों पर यकीन कर लेंगे लेकिन इन्हें यह नहीं पता इन जैसों के बहकावे में अगर आप आओगे तो आपको निराशा के अलावा कुछ नहीं

मिलेगा। इस इंडस्ट्री में वही सफल है जो बैठना और भटकना इन दोनों से दूर है। वे लोगों के जीवन में इंतजार भले हो लेकिन खुशियां अनेकों प्रकार से उनके भविष्य में आती है। उन्हें गम नहीं होता कि मुझे इतना समय और मेहनत क्यों करना पड़ रहा है उन्हें इसका ज्ञान रहता है कि उनका आने वाला समय अच्छा रहेगा। बेफिक्र होकर अगर आप बिना किसी के भ्रम में अपना जीवन व्यतीत करते हैं तभी आपको सफलता नसीब होगी। इस इंडस्ट्री में कोई आपको कहता है कि आपको मैं काम दिला दूंगा। आप उसी वक्त समझ जाइए कि वह इंसान आपको भ्रम में डालने का प्रयत्न कर रहा है क्योंकि इंडस्ट्री में किसी जेनुइन आदमी के पास इतना वक्त नहीं कि आप की कला को बिना भापे आपको काम दिलाने की बात कहें।

यहां कुछ लोग होटलों में बड़े बड़े माल में बुलाकर आपको काम दिलाने की बात कहेंगे अगर आप मुंबई में है तो आप अच्छे से समझोगे कि अंधेरी, महाडा, आराम नगर और इनफिनिटी मॉल, ऐसे जगहों पर कई ऐसी मीटिंग चलती है जहां पूरी की पूरी फिल्म तैयार हो जाती है। यही नहीं बिना ऑडिशन दिए आप का कैरेक्टर तक फिक्स कर दिया जाता हैं। जिनके पास ऑफिस है वह लोग आपको वही बुलाएंगे लेकिन जिनके पास नहीं वह कुछ बहाना देकर आपको बेवकूफ बनाएंगे। कुछ तो चाय की टपरी और वडापाव के ठेले पर ही अपनी मीटिंग शुरू कर देते हैं। मानो करोड़ों की मूवी

ऐसी ही जगह बनती है। एंडिंग में कुछ अमाउंट की मांग करके आपको यकीन दिला देंगे कि आपका कैरेक्टर इस मूवी में फिक्स है। लीड रोल हो या कैमियो चाहे जैसा भी रोल आपको चाहिए इनके लिए सभी अवेलेबल होता हैं।

अगर आप भ्रम में आ जाते हैं और इन्हें आप विश्वास कर पैसा दे देते हैं तो समझ जाइए कि वह आपके पैसे लेकर वही से गायब हो जाएंगे कि आपको उन्हें ढूंढते ढूंढते जमाना बीत जायेगा। जिस मूवी में काम मिलने वाला था उस मूवी का नाम ही भूल जाना पड़ेगा।

आज भारतीय सिनेमा पूरे भारत में एक साल में 1000 से भी ज्यादा मूवी को रिलीज करती है दुनिया भर में यह भारतीय सिनेमा जगत के लिए गर्व करने वाली बात है लेकिन ऐसे लोगों की वजह से भ्रम के कारण लगभग लाखों मूवीस यह खुद से बनाने लगते हैं वह भी अलग-अलग जगहों पर बैठकर और लोगों को ज्यादा विश्वास दिलाने के लिए कुछ लोग अपनी नकली फिल्मों का टाइटल और मुहूर्त शॉट तक लोगों को दिखाकर कलाकारों को भ्रमित करते हैं।

इनके व्यवहारों को पहचाने इनके मोटिव को समझे की क्यों यह आपको सामने से काम ऑफर कर रहे हैं? सोचिए की ऐसा क्या हुआ कि इंडस्ट्री में अब ऑडिशन कि नहीं पैसों की जरूरत

पड़ती है! यह सब सोचने के बाद निष्कर्ष निकाले कि यह व्यक्ति सही है या नहीं वैसे तो सही होगा भी नहीं क्योंकि कुछ लेकर आपको काम दिलाने का वादा कर रहा है।

इन्हें आप यह कहो कि "आप जितने की मांग कर रहे हैं उससे दुगना मेरे पेमेंट में से ले लो। अगर आप तो प्रोडक्शन में ही हैं और कलाकार का चेक प्रोडक्शन के पास ही जाता है मुझे देना मत अगर मैंने आपको नहीं दिया तो"

यह सुनने के बाद देखना वह लोग आपको घुमाना चालू कर देंगे कि "नहीं पहले आप को देना ही होगा। मुझे सामने देना पड़ता है बात पैसे और भरोसे की नहीं प्रोसीजर की है सारा काम यहां सेटिंग के थ्रू होता है। आपको पहले देना ही पड़ेगा! अगर नहीं तो आप स्ट्रगल ही करो जिंदगी भर! ऐसे रामायण आपको वह व्यक्ति सुनाएगा क्योंकि उसे आप को बेवकूफ बनाना होता है। कोई काम ना उसके पास होता है ना कोई काम वह आपको देने वाला होता है। अब आप ही सोचो कौन ऐसा व्यक्ति होगा जो आपके ऐसे ऑफर को मानेगा नहीं। वहां उसे डबल पैसे मिल रहे हैं उसके बावजूद वह व्यक्ति मना कर रहा है और अब भी पैसे की जिद कर रहा है इसका साधारण सा मतलब है कि वह व्यक्ति फ्रॉड है।

इन जैसों के कई प्रकार है यह अलग-अलग रूप में आप को बेवकूफ बनाने के फिराक में रहते हैं आए दिन मुंबई में ऐसी कई

घटनाएं सुनने मिलती है लेकिन किसी कारणवश वह दब के रह जाते हैं आपके बेवकूफ बनने से पहले और बाद में भी आपको सहारा किसी का नहीं मिलेगा। आपको हर पल हर वक्त हर जगह सभी के सामने शर्मसार होना पड़ सकता है। इसी वजह से कई आर्टिस्ट खुद को हमेशा इसी चीज से बचा कर रखते हैं कि कहीं मेरी बेवकूफ बनने वाली बात किसी के सामने मेरे समाज, मेरे परिवार के बीच ना आ जाए और यही सबसे बड़ी परेशानी है। इसी कारण यह मुद्दा कभी चर्चा का विषय तक नहीं बना क्योंकि ऐसे लोग जो गलत देखते वक्त भी आवाज नहीं उठाते और खुद के साथ अगर गलत हो भी गया तो भी आवाज नहीं उठाया करते। तो आप खुद सोचिए कि कोई इस मुद्दे को गंभीरता से क्यों लेगा। जब आप खुद गंभीर नहीं है। आज लाखों की तादाद में नए कलाकारों को बेवकूफ बनाकर ऐसे लोग अपनी जेबें भर रहे हैं कोई शारीरिक रूप से, किसी को उकसा कर उनसे काम की बात करता है या कोई मोटे मोटे पैसे लेकर इन्हें काम दिलाने की बात करता है। ऐसे लोग हमेशा खुलेआम जो मन करता है वह करते हैं। और ना जाने कितने मासूम लोगों के सपनों के साथ खिलवाड़ किया जाता है। क्या यह आपकी जिम्मेदारी नहीं बनती? कि जो आपने महसूस किया है उसे हर लोगों तक पहुंचाएं और आने वाले नए कलाकारों को जागरूक करें।

नशा और दिखावटी जिंदगी

नशा आज हमारे देश की बढ़ती समस्या का जिम्मेदार है, हमारे देश में लगभग 70% आबादी युवाओं की है और नशे की बहती हवा में कुछ युवा है जो ऐसे खुद के जीवन के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। जिससे देश और आने वाली पीढ़ियों के लिए यह चिंता का विषय बनते जा रहे हैं, नशे के कारण ऐसे युवाओं को मानसिक एवं स्वास्थ्य पर काफी बुरा प्रभाव पड़ता है ऐसे ही लोग डिप्रेशन के शिकार बनते जाते हैं। नशे के आदी हो चुके लोगों को कुछ नही सुझता। वह क्या कर रहें है? और आगे उन्हें जीवन में क्या करना है? आधा जीवन बगैर होश के कटता है, वैसे लोग खुद में नहीं खुद से बाहर होते हैं।

इनमें से ज्यादा प्रभावशाली और जानलेवा ड्रग्स को माना जाता है जो एक इंसान के जीवन को बर्बाद करने के लिए पर्याप्त है। इसे (ड्रग्स को) आज के युवा बड़े शौक से लेते हैं और इसे लेने के बाद मानो ऐसे नींद में रहते हैं कि इन्हें अपने जीवन से कुछ लेना-

देना ही नहीं होता है। ऐसे युवा ना केवल खुद बल्कि अपने आसपास के लोगों के लिए भी खतरा है। यह हमारे समाज को एक गलत दिशा में ले जा सकते हैं किसी को जबरदस्ती या अपने साथ किसी और को भी नशे का पात्र बना सकते है। ऐसे में हमें इन जैसों से सावधान रहना आवश्यक है, लेकिन देखा जाए तो ऐसे लोगों को दोष देने का कोई मतलब नहीं है। अगर पेड़ के पत्ते खराब है तो इसका मतलब यह अपने जड़ के कारण है। इन सभी चीजों के जिम्मेदार यानी जड़ ड्रग्स विक्रेता (नशीली दवा के विक्रेता) जिन्हें **"ड्रग पेडलर"** भी कहा जाता है और यह लोग देश में बड़ी तेजी से अपने पांव पसार रहे हैं। यह लोग बड़ी चतुराई से अपनी यह घिनौनी व्यापारिक सोच एक बड़ी कम्युनिटी फैलाते हैं जिससे एक के बाद एक युवा इसकी चपेट में आते हैं आजकल यह ड्रग पेडलर हमें मुंबई फिल्म इंडस्ट्री में फैलते दिख रहे हैं, जिससे एक बड़े पैमाने में कलाकारों की ड्रग के चपेट में आने की संभावना बढ़ गई है, क्योंकि आए दिन कई ऐसे लोग हमारे सामने आ चुके हैं और ना जाने कितने कलाकार इनके जाल में फंस रहे हैं।

मुंबई में बड़ी तादाद में इंडस्ट्री में काम करने के उद्देश्य से लोग आते हैं और मुंबई में अकेले अपने परिवार को छोड़ कर रहते हैं। अपने अकेलेपन और काम ना मिलने के कारण कुछ कलाकार इन ड्रग पेडलर के संपर्क में आते हैं और इनके शिकार बनते हैं इन

ड्रग पेडलर के नाम अनेक होते हैं लेकिन मकसद सिर्फ एक होता है कि नशे की लत कैसे भी लोगों को लगाया जाए और वह उनसे हमेशा ड्रग का व्यापार करते रहें और इसी में फस कर कई कलाकार अपने सपनों को ड्रग के कारण अधूरा छोड़ देते हैं कुछ कलाकार इसे एक मजे की तौर पर देखते हैं और "इससे ज्यादा मेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा" इस गलतफहमी में अपना जीवन निकालते हैं लेकिन उन्हें यह नहीं पता रहता कि आगे यही मजा एक सजा के तौर पर उनके जीवन में आएगा और कई तरह के मानसिक रोग उनके जीवन में दस्तक देंगी। उनके अंदर कुछ करने की इच्छा ही नहीं बची होती है और धीरे-धीरे मानसिक कमजोरी के कारण वे डिप्रेशन का शिकार होते जाते हैं और गलत कदम उठा लेते हैं।

ड्रग्स के चंगुल में अगर कोई फस जाता है वह भला खुद के सपनों को पूरा कैसे करें। उसके द्वारा की गई मेहनत और उसके इंडस्ट्री के प्रति लगाव को बस कुछ ही पलों में यह ड्रग का लत खत्म कर देता है। ऐसे एक नहीं बल्कि हजारों की तादाद में लोग होते हैं जो गलत राह की तरफ बढ़ कर अपने जीवन को सपनों से दूर और मौत के एकदम करीब ला देते हैं। इस फिल्म इंडस्ट्री में हम देख रहे हैं कि लगभग करोड़ों की डीलिंग कर रहे, यह पेडलर ड्रग्स के जरिए जहर फैला रहे हैं और कलाकार एक के बाद एक इसके शौकीन होते जा रहे हैं, इससे इनकी लत और बढ़ जाती है और वह गलत

कदम उठा लेते हैं कोई सुसाइड कर लेता है, तो कोई अपने परिवार से दूर हो जाता है। हमें आए दिन ऐसी खबर मिलती रहती है कि इसमें ना सिर्फ छोटे कलाकार बल्कि बड़े बड़े कलाकार भी शामिल होते हैं।

मुंबई जैसे बड़े शहरों में दिखावे को अहम माना जाता है यहां की एक कहावत है कि जैसा दिखेगा वैसा बिकेगा। भले वह गरीब ही क्यों ना हो अगर वह इंडस्ट्री में काम करने के मकसद से आते हैं तो कुछ कलाकार यह सोचते हैं कि "अगर मैं अच्छा दिखूँगा तभी यहां इज्जत मिलेगी, अमीर की तरह रहना यहां के कल्चर में ही है" यह लोगों की सोच ऐसी रहती है कि अमीरों से दोस्ती करना, महंगे पार्टीज में जाना, नशे करना लेकिन अगर यह सभी को ऐसे लोग दिखावा समझते हैं और इस गलतफहमी में रहते हैं कि मुझे इज्जत और मेरी पर्सनैलिटी में डेवलपमेंट आएगा तो यह बिल्कुल गलत है क्योंकि यह उन जैसों की नजरों में ही ठीक है। यह लोग बस कुछ लोगों तक ही सीमित रहते हैं लेकिन जीवन में आगे बढ़ने के लिए दिखावट की नहीं काबिलियत की जरूरत पड़ती है। अमीरों की दोस्ती नहीं, मां-बाप का साथ और उनके आशीर्वाद की जरूरत होती है। हमारा जीवन हमारे समाज के बिना अधूरा है और यही सत्य है। अब समाज में कई तरह के लोग होते हैं, अच्छे और बुरे लेकिन आपको किसके साथ मिल कर आगे बढ़ना है। यह आप पर

ही निर्भर करता है और यही आपके भविष्य का अच्छा या बुरा जो भी हो एक परिणाम स्वरूप आपके सामने आता है। आज के समय में लोग खुद की वास्तविकता को छुपाकर अंदर रखते हैं और जो नहीं है उसे सबके सामने दिखाते हैं। जिससे वे लोग केवल नकली पन का जीवन ही जीते हैं या यूं कहें कि दिखावे के चक्कर में वास्तविकता को बदल देते हैं।

दूसरों को देखकर अपने खान पान, सोच और पहनावे को बदल कर रख देना दिखावेपन का ही संकेत है यहां सिर्फ कलाकार ही नहीं बल्कि कोई भी व्यक्ति क्यों ना हो, खुद के जीवन को पूरी तरह बदल कर रख देता है। आप यह सब उन्हें ही दिखाते हैं जिन्हें दिखावापन देखने का शौक चढ़ा हुआ है। लेकिन आज भी ज्यादातर लोग आप की वास्तविकता को देखने को इच्छुक रहते हैं, आप वास्तव में जो है उसे देखते हैं। कुछ लोगों के चक्कर में यह लोग कई बड़ी गलतियां कर देते हैं, वैसे लोगों को अपनी सारी उम्र पछतावे के साथ बितानी पड़ती है। वास्तविकता और दिखावापन या दिखावटी जिंदगी, असली और नकली जीवन को दर्शाता है। आंतरिक रूप से इंसान मजबूत होता है ना कि अपने बहरी रंग रूप से। इसलिए अपने मन के अंदर झांकने का प्रयत्न करें, और सच्चाई को स्वीकार करें, इसकी आदत डालें। यही आपके जीवन की समय सीमा तय करेगा। यही आपके भविष्य में निखार लाएगा या बिगाड़ देगा। आप

क्या है? उससे सामने वालों को जरा भी फर्क नहीं पड़ता लेकिन आप जो नहीं है उसकी वैधता ज्यादा समय तक नहीं टिकती इसलिए वास्तविक जीवन में अंदर से आप क्या हैं? उस पर पर्दा डाले बिना लोगों के बीच वही बन कर रहे हैं, जो आप हकीकत में हैं। झूठे दिखावे से जो चीजें आप नहीं पा सकते, उसे आप वास्तव मैं अंदर से जो हैं वह बन कर पा सकते हैं क्योंकि आपको पता है मैं क्या हूं? और क्या कर सकता हूं? आप अपने मन के अनुसार अपनी राह की रणनीति बना सकते हैं और दिखावटी जिंदगी में केवल दूसरों को देख कर आगे बढ़ते हैं, जिसका परिणाम आपको स्वयं मालूम नहीं होता। लेकिन जब आप अपनी खुद की बनाई राह पर स्वयं चलते हो तो आपको मालूम होता है कि इसका परिणाम क्या मिलेगा? और आप जीवन में आगे बढ़ते चले जाते हो क्योंकि उसका अनुभव आपको पहले से ही होता है।

सकारात्मक सोच के साथ

एक व्यक्ति के सफलता उसके परिश्रम पर निर्भर करता है उसका कल उसके वर्तमान पर पूरी तरह टिका रहता है। परिश्रम का महत्व हर व्यक्ति को समझना चाहिए क्योंकि मेहनत भले ही आपको आज तकलीफ देगा, लेकिन यही परिश्रम आपके कल को सुकून और खुशियों से भर देगा। कई लोग मेहनत से ज्यादा अपने भाग्य पर भरोसा करते हैं वह ऐसा सोचते हैं कि मेरा जीवन भाग्य तय करेगा, लेकिन किसी भी व्यक्ति के जीवन में अगर मेहनत नहीं है तो वह जीवन व्यर्थ है। इसलिए हर व्यक्ति के लिए यह समझना काफी जरूरी है कि आपका भविष्य आपके भाग्य से नहीं आपके कर्म से बनता है। सिर्फ भाग्य के भरोसे रहेंगे तो जीवन में काफी पीछे रह जाएंगे।

आपकी इच्छा और आपके द्वारा लिए गए कोई भी संकल्प को पूरा करने हेतु मेहनत की आवश्यकता होती है मानो हर इंसान की सफलता का राज उसका परिश्रम होता है कठिन से कठिन वक्त

आते है लेकिन उस कठिन वक्त से लड़ने के लिए आप में क्षमता होनी चाहिए, आपके स्ट्रगल वाले समय आपके हौसलों में और इच्छाशक्ति में कोई कमी नहीं होनी चाहिए। समझ लीजिए कि यह एक तरह आपके जीवन का इम्तिहान है जो आप अपने परिश्रम के जरिए इसे पार कर सकते हैं। जब आप उस समय को पार कर लोगे तो आपके जीवन पर सबसे पहले आपको गर्व होगा और लोगों को बाद में क्योंकि मेहनत से पाई हुई खुशी बिल्कुल अलग सी होती है और समाज में इसकी काफी चर्चाएं होती है और बिना मेहनत के आगे बढ़ने वाले लोग कभी इसके पात्र नहीं बन पाते और अपने जीवन में कभी सुखी नहीं रहते क्योंकि वह एक तरह से दूसरो के द्वारा किया गया एहसान के समान होता हैं। क्योंकि इसमें पूरी तरह से किसी और का मेहनत होता है, ऐसे में आने वाली परेशानियों या समस्याओं का सामना वह कभी नहीं कर सकता क्योंकि उसे पहले से कुछ भी अनुभव नहीं रहता। साथ ही आगे आने वाली परीक्षाओं के लिए वह कभी तैयार नहीं रहता। जीवन में अपनी काबिलियत हर कोई दिखाना चाहता है वह सोचता है कि वह अपनी काबिलियत के दम पर कुछ करे। लेकिन आज के वक्त हमें कुछ ऐसे भी लोग दिखते हैं जो बिना काबिलियत देखे, बिना आपको परखे आपसे कुछ मांग करते हैं ताकि आपको शॉर्टकट तरीके से आगे बढ़ा सके। यह काफी गलत है कि कुछ भी होने के बावजूद अपनी काबिलियत का सौदा

उन व्यक्तियों के साथ कर बैठते हैं जिससे और भी लोगों का मनोबल नीचे गिरता है।

उन्हें सब्र करना सीखना चाहिए कि मेरी काबिलियत की कीमत नहीं है बल्कि उनकी काबिलियत की कीमत उससे कहीं ज्यादा है और उन्हें इन सब चीजों में कभी नहीं पड़ना चाहिए। अगर कुछ कलाकार ऐसा करते हैं तो वह अपने सपनों का गला घोट देते हैं, जीवन में तो हार जीत कुछ समय के लिए रहती है आज अगर हार है तो कल जीत। इसकी समय सीमा आपके हाथों में होती है कि आपको हार के साथ समय बिताना है या जीत के साथ। अपने कर्मों द्वारा आप अपने जीवन में हार या जीत की स्थिति ला सकते हैं हर वह व्यक्ति जिसे वास्तविकता में जीना आता है वही व्यक्ति अपने जीवन में कुछ कर दिखाते हैं इसलिए जितनी मेहनत है उतनी सकारात्मक सोच की भी जरूरत है। आपके मन में सकारात्मक सोच है तब आपको आगे बढ़ने में हौसला मिलता है।

सकारात्मक सोच आपके जीवन की अनमोल कड़ी है जिसके बिना जीवन अधूरा है क्योंकि आप कुछ अच्छा सोचते हैं इसका मतलब आप का मन सकारात्मक राह पर चल रहा है आपका जीवन बदलना आप ही के हाथ में होता है। आप एक मात्र आपके भविष्य के गवाह होंगे, आपके किए कर्मों और हर मुश्किल घड़ी को आपने देखा है यह मुमकिन सिर्फ आपकी सोच के द्वारा

हुआ है आपने अच्छा सोचा तब आपने अच्छा पाया। सकारात्मक सोच के जरिए हर कठिन से कठिन घड़ी से निकलने का रास्ता खोज सकते हैं आपको बस खुद पर यकीन होना चाहिए और नकारात्मक सोच को अपने मन के भीतर ना आने दे, मनुष्य के विफलता का कारण उसकी नकारात्मक सोच भी होती है कभी अच्छा नहीं सोचते अपने मुश्किल वक्त से हार मानकर अपने सफर को अधूरा छोड़ देते है। एक नकारात्मक सोच आपके जीवन को अंधकार की ओर ले कर चला जाता है वहीं सकारात्मक सोच ही जीवन में हर सपनों के दीयों को जलाए रखता है। असंभव को संभव किया जा सकता है, आपको आपकी सोच पर विश्वास होना चाहिए और अपनी सोच को अपने कर्मों द्वारा एक सही दिशा दे। सकारात्मकता आपके जीवन का वह उपहार है जो आपके भविष्य को रोशन करने के लिए काफी है। जितनी भी बातें किताबों में कही गई है मालूम पड़ता है जीवन में तीन चीजों का होना बहुत ही आवश्यक है पहली मेहनत दूसरी सकारात्मक सोच और तीसरी स्वास्थ्य, स्वास्थ्य का सही होना भी काफी आवश्यक है क्योंकि हमारे स्वास्थ्य के ठीक ना होने पर यह हमारे सोच को कमजोर बनाता है और अगर आपका स्वास्थ्य ठीक है तो आपका मन अंदर से मजबूत होगा और परिश्रम के बाद आप शारीरिक रूप से अच्छी स्थिति में होंगे। इंडस्ट्री में आपकी शख्सियत केवल आपके चेहरे से नहीं देखी जाती है आप में स्टेमिना

है या नहीं आपकी बॉडी लैंग्वेज ठीक है या नहीं, इससे भी देखा जाता है आपका स्वास्थ्य ठीक होगा इसका मतलब आप की यह दोनों चीजें खुद-ब-खुद झलकती है।

इसीलिए सबसे पहले आप अपने स्वास्थ्य पर ध्यान दें अगर स्वास्थ्य बेहतर ना हो तो आप आलस में अपना जीवन व्यर्थ कर दोगे। आप को कुछ करने का मन नहीं होगा और सकारात्मक सोचने के बावजूद परिश्रम से दूर भागते रहोगे इसलिए इन तीन चीजों को अपने जीवन में महत्व देना सीखे तभी आप कुछ करने के लिए सक्षम रहोगे।

भले लोग आपको आपकी नकारात्मक सोच के जरिए डिमोटिवेट करने की कोशिश करें लेकिन आप उन्हें नजरअंदाज करना सीखें इतना समझ लीजिए ऐसे लोग आपको जरूर मिलेंगे यह जीवन की सच्चाई है और आपको अपने जीवन में एक ना एक बार इस से सामना जरूर करना पड़ेगा। आपको बिना हार माने अपने कार्य में आगे बढ़ते रहना चाहिए और जीवन की हर कठिनाइयों का सामना करने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए।

किताब का अंश

बदलाव की जरूरत हम सभी को है फिल्म इंडस्ट्री का सच कुछ ऐसे लोगों को समझाने का प्रयास किया गया है। जिससे नए और आम कलाकारों को कोई बेवकूफ न बना दे, कई ऐसी बातें हैं जिन्हें लोग अच्छे से नहीं जानते और ऐसी बातों का जानना उन सभी लोगों के लिए जरूरी है जो इस इंडस्ट्री में कुछ करने आते हैं यह बातें आपको हर किसी से नहीं मालूम चल पता इस लिए यह किताब **"एक सफर में"** लिखा गया है।

केवल यही मुद्दा नहीं, इस किताब में कई ऐसे मुद्दों पर विश्लेषण किया गया है जो एक इंसान के जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण है इस किताब को पढ़ने के बाद अगर आप आकलन करेंगे कि इस किताब में है क्या? तो आपको समझ आएगा कि हर छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी चीजें, जो इंसान के जीवन से जुड़ी होती है। वह बातें आपको इस किताब में मिलेंगे। कोई लेखक अपने विचार, अपनी सोच को किसी के बीच पहुंचाने के लिए एक किताब

का सहारा क्यों लेता है? क्योंकि किताब एक ऐसा मध्यम है जिसके द्वारा लेखक अपने विचारों को लोगों तक आसानी से पहुंचा सकता है।

हर लेखक ज्यादा शोहरत और नाम नहीं कमा पाता, वह सिर्फ यही चाहता है कि उसकी सोच, उसके विचार से लोगों को फायदा हो। हर लेखक मोटिवेशनल स्पीकर नहीं होता, जो लोगों को मोटिवेट कर बाद में मोटे-मोटे रकम कमाते हैं और उस मोटिवेशन का कोई मतलब भी नहीं जो हमें भीड़ में मिले क्योंकि मोटिवेशन एकांत में किताब के जरिए ही मिल सकती है क्योंकि किताब आपको खुद से जोड़ता है। उन बातों को आपके जहन में उतारने के लिए मजबूर करता है इसलिए कई लेखक अपने विचारों को शब्दों के रूप में किताबों के सहारे आपके सामने पेश करता है। और किताब इसीलिए क्योंकि इस सदी की सबसे क्रांतिकारी चीज किताब ही है यह वही समझ सकते हैं जिन्हें किताबों के प्रति लगाव हो और किताब के माध्यम से लेखक यही चाहते हैं कि इंडस्ट्री और हमारे जीवन से जुड़े कुछ ऐसे तथ्य है। जिन्हें जानकर हम जागरूक हो, लोग इस पर जोर दें, हर चीज जो एक व्यक्ति के जीवन में जरूरी है। इस किताब के माध्यम से लोगों तक पहुंचे यही उम्मीद एक लेखक करता हैं।

केवल एक दो लोगों की सोच से समाज नहीं बदलता, केवल एक के कदम उठाने से हालात नहीं बदलते। अगर हालात सही हुए होते तो आज हर कोई इस परेशानी से बच पाता, हर कोई गलत व्यक्तियों से बच पाता, आपकी सही सोच आप लोगों तक पहुंचाएं, आपके साथ उन्हें जोड़ें, आपकी सोच और आपकी जागरुकता लोगों को समझाएं और हर मुद्दे पर आवाज उठाएं। हालात सामान्य और जड़ से खत्म होने में वक्त जरूर लगेंगे किंतु एक ना एक दिन आपकी सोच रंग जरूर लाएगी। आप गलत चीजों को रोक सकते हैं, आप ही बदलाव ला सकते हैं जरूरत है एकता की और सही सोच की।

अंशुमन भगत

जीवन में समस्याओं का आना

हर किसी के जीवन में समस्याएं आती है कभी कठिन परिस्थिति में तो कभी बेहतर परिस्थिति में भी। समस्याएं आपके जीवन में अनेकों रुप में आ सकती हैं और यह निश्चित है, इसे आना ही आना है और बिना बुलाए आना है या तो हम ऐसी स्थिति उत्पन्न करते हैं जिससे समस्या हमारे जीवन में आती है। जिसे समस्याओं का सामना करना आता है वह लोग अपने जीवन में हार का सामना नहीं करते और वह व्यक्ति जो समस्याओं का सामना नहीं कर पाते वह व्यक्ति अपने जीवन में हमेशा निराश रहते हैं, हमेशा इसी बात से चिंतित रहते हैं कि यह समस्या कब खत्म होंगे? वह अपने जीवन में कभी सुखी नहीं रहते और छोटी-छोटी समस्याएं भी बड़ी होती जाती है।

ऐसे लोग आने वाली समस्याओं को झेलना तो दूर उससे भागते फिरते हैं वह यह नहीं जानते कि समस्याएं कभी इंसान का पीछा नहीं छोड़ती। यह आपका पीछा छोड़ेगी जब आप खुद इन से

लड़कर इनसे पीछा ना छुड़ाओ। तकलीफ और निराशा हर एक व्यक्ति को अपने जीवन में देखना होता है और देखना भी चाहिए क्योंकि समस्याएं जितनी होंगी आप उतना ही मजबूत बनेंगे। आप में आत्मविश्वास बढ़ेगा, आप सभी परेशानी झेल सकेंगे। समस्याओं से दूर भागने के बजाय उन समस्याओं से लड़ने की शक्ति रखे तब जाकर आप उसे खत्म कर सकते हैं, नहीं तो आपका जीवन बिना समस्याओं के नहीं रहेगा, यह आपके जीवन के अंत तक आपके साथ रहेगा।

जब आप कोई बड़ा सपना देखते हैं तो हमारे सपने भी हमारा इम्तिहान लेती है। कि हम उसे पाने के काबिल है या नहीं और समस्याओं का हमारे जीवन में आना एक प्रकार से सही है। आपके सपने तभी पूरे हो सकेंगे जब आप मानसिक रूप से मजबूत हो और विचार से सकारात्मक हो। अगर सपने सभी के सच होते तो आज इस संसार में कोई दुखी नहीं होता। सफल होना आपके ऊपर निर्भर करता है। आप की दृढ़ शक्ति और आप में आत्मविश्वास होना काफी जरूरी है इसी के साथ अच्छे विचार भी आपकी काफी मदद करती है आपके जीवन में आगे बढ़ने के लिए।

हमारा भारत 138 करोड़ जनसंख्या वाला देश है यहां युवाओं की जनसंख्या अधिक है हमारी आज की पीढ़ी टेक्नोलॉजी के सहारे अपना जीवन बिता रहे है। वह अपना हर एक काम टेक्नोलॉजी

के माध्यम से करते हैं, मोबाइल इंटरनेट जैसी सुविधाएं इनके जीवन में मानो गोंद से चिपक ही गई है। जिससे आज के युवा हमारी संस्कृति, खुद के विचार और अपनों से दूर होते जा रहे हैं, वे काफी कुछ नुकसान तो कर ही रहे हैं इसके साथ साथ अपना भी नुकसान कर रहे हैं चाहे वह शारीरिक रूप से हो या मानसिक रूप से, वह नुकसान ज्यादातर अपना ही कर रहे हैं।

पहले के मुकाबले आज के युवाओं में वह फुर्ती और स्वास्थ्य देखने नहीं मिलता, जिससे एक मनुष्य की न्यूनतम आयु आज के समय 50 से 60 वर्ष की रह गई है, जो पहले 80 से 90 वर्ष की रहा करती थी। भले टेक्नोलॉजी आज के समय में जरूरी है और टेक्नोलॉजी के कारण ही हमारा समय काफी बचता है किंतु अगर हम अलग नजरिए से देखें तो इसके नुकसान भी हैं, हर सिक्के के 2 पहलू होते हैं और हमें दोनों बातों का ध्यान रखना जरूरी है। टेक्नोलॉजी से भले हमें काफी मदद मिलती हो लेकिन वह हमारे पर्यावरण और हमारे स्वास्थ्य के लिए नुकसानदायक भी है। आज के लोग इस भागदौड़ वाली जिंदगी में खुद को आगे रखने की सोच के कारण अपनी कई ऐसी बातें पीछे छोड़ देते है। उस बात की परवाह आज के युवा नहीं करते और इसमें ना केवल उनका, उनके परिवार, उनके समाज और देश का भी नुकसान होता है।

पहले के लोग किताबों से जुड़कर रहते थे, लोग खुद को शांत और मन एकाग्र करने के लिए किताबों का सहारा लेते थे और देखा भी गया है। पहले के लोग किसी कॉफी शॉप, किसी गार्डन या अपने खाली समय में लाइब्रेरी में किताब पढ़ा करते थे, जिससे उनकी मानसिकता मजबूत होती थी और आजकल के लोग वही गार्डन के बाहर बस अपना समय फालतू में गँवाते है। किताब पढ़ने में जैसे उन्हें शर्म आती हो, यही सब के कारण आज के युवा मानसिक नजरिए से कमजोर होते जा रहे हैं। आज के युवा किसी भी तकलीफों का सामना करने के लिए तैयार नहीं होते, वह आखिर समस्याओं के सामने खुद को हारा साबित कर ही देते हैं।

इसी के साथ आप व्यवहार भी अपना अच्छा बना कर रखें क्योंकि हमारे व्यवहार और हमारे संस्कार ही हमें दूसरों की नजरों में बेहतर इंसान बनाता है आपको समाज में इज्जत से परखा जाता है इसलिए हमें हमारे व्यवहार और संस्कार में कभी कमी नहीं लानी चाहिए यही चीजें आपको सही समय पर एहसास दिलाएंगे, जब आपके बुरे वक्त में भी कोई आपका सहारा बनेगा।

जीवन में कभी अकेले सफर नहीं करना चाहिए, अगर आप से कोई गलती होती है या आप रास्ता भटकते हैं तो कोई आपको समझाने वाला, मदद करने वाला मिले ऐसे लोगों से रिश्ता बना कर रखें। क्योंकि जीवन बिना सहारे के कभी सफल नहीं होती। किसी

ना किसी रूप में ऐसी घड़ी आ ही जाती है कि हमें लोगों की मदद और लोगों का सहारा लेना पड़ सकता है। हमारा व्यवहार अच्छा रहेगा तो सामने से मदद भी हमें वक्त पर मिलेगा लेकिन हमें यह भी ध्यान रखना है कि हमें पूरी तरह सहारे पर निर्भर नहीं होना है, हमें अपने कठिन समय में इसकी जरूरत पड़े इस सोच के साथ जीवन जीना है।

लोभ का परिणाम

आप अपने जीवन में लोभ ना रखें क्योंकि लोभ ही मनुष्य को बर्बाद करता है। है लोभ आपसे हर वह गलत काम करवाता है जिसकी समाज में कोई जगह नहीं, गलत तरीके से पैसे कमाना, किसी को ठगना, यह सबसे बड़ा पाप है और ऐसे में बुद्धि भ्रष्ट होती है और इसी कारण भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है लोभ के कारण आप क्षण भर के लिए खुश रहेंगे लेकिन यही लोभ आपको जीवन में हर बार हर पल केवल आंसू देगा जिसकी स्थिति काफी भयावह होगी।

आज के समय जो कोई कर्मा पर विश्वास रखता है, उसे यह बात काफी अच्छे से ज्ञात होगी कि आज जैसा करोगे कल वैसा भरोगे। किसी के साथ किया गया गलत काम आपके भविष्य में ठीक उसी तरह आपको भरना पड़ेगा।

एक मनुष्य को अपने जीवन में क्रोध और लोभ त्याग देना चाहिए। जब एक मनुष्य के अंदर लोभ और क्रोध का जन्म होता है

तो वह मनुष्य सुख समृद्धि से वंचित रह जाता है। मनुष्य के अंदर अहंकार तो ठीक भी है किंतु लालची होना, उससे भी भयावन होता है क्योंकि अहंकारी व्यक्ति रिश्तेदारी खराब करता है किंतु लालची व्यक्ति उन्ही रिश्तो का खून करने पर भी उतारु हो जाता है। मनुष्य का लोभ सबसे बड़ा शत्रु होता है यह इंसान में कब आ जाए पता ही नहीं चलता इसलिए हर इंसान के अंदर संतुष्टि होना चाहिए, उसे यह समझना चाहिए कि मेरे पास जितना है काफी है। अगर नहीं है तो अपने जीवन में परिश्रम कर पा लूंगा। ऐसे लोगों में लोभ कभी अपनी जगह नहीं ले पाता, लोभ उसी व्यक्ति के अंदर आ जाता है जिसमें संतुष्टि नहीं होती, हमेशा और पाने की भूख और जल्दी पाने की सोच के कारण लोभ उसके अंदर आता है फिर वह गलत कार्य करने लगता है।

अगर आप किसी चीज का लालच रखते हैं तो जरूरी नहीं उसे गलत काम करके पाया जाए, आप लालच रखें किंतु उसे अपने परिश्रम से पाएं उसे गलत तरीके से पाने की चाह रखने से आप काफी गहरे संकट में पड़ सकते हैं।

सुख और दुखों का जीवन

थोड़े समय के लिए दुख का आना भी अच्छा है क्योंकि इससे हमें जीवन में हर हालात से लड़ने की शक्ति मिलती है और हमारे अंदर एक अलग तरीके का आत्मविश्वास जगता है। सुख और दुख हमारे जीवन में आते रहते हैं दुख में जितना संभलना मुश्किल है उतना ही खुशी में क्योंकि खुशी किसी व्यक्ति को संभाले नहीं संभलती। उस स्थिति में मनुष्य अपनी मानसिकता को गलत राह पर ले जाते हैं, अधिक खुशी होने से कई व्यक्ति अपने राह से भटक जाते हैं वह आलस के शिकार हो जाते है। वे सोचते हैं कि मैंने अपने जीवन में सब कुछ पा लिया है अब उन्हें कुछ करने की जरूरत नहीं, लेकिन उस स्थिति में आपको भले कम मेहनत करनी पड़े किंतु उसे संभाले रखना आपकी बड़ी जिम्मेदारी बनती है कि कहीं आप गलत राह पर तो नहीं चल रहे।

जीवन में खुशी का होना बहुत ही जरूरी है लेकिन उसे संभालना काफी मुश्किल हमें ध्यान रखना है कि उस स्थिति में हम कुछ गलत कदम ना उठा ले सुख और दुख तो हमारे कर्म के हिसाब से ही मिलता है। आप जैसा करोगे वैसा फल आपको मिलेगा इसलिए हमेशा सही कदम अपने जीवन में उठाए। दूसरों का गलत ना सोचे अगर आप आज कुछ बेहतर करोगे तो कल आपके साथ समय अच्छा करेगा। दूसरों का भला सोचोगे तो खुद का भला होगा। जीवन में मदद देना और मदद लेना यह दोनों चीज आवश्यक है आपके कर्म के अनुसार ही आपका वर्तमान संतुलित तौर पर चलता रहेगा।

अगर आप खुश रहेंगे तो हजारों लोग आपके पीछे रहेंगे, एक तरह से आपसे लोग आस रखेंगे कि यह हमारा मदद कर सकता है। यह भावना आप कभी मत भूलिएगा कि आपके साथ भी हो सकता है, सबसे महत्वपूर्ण यही है कि आज के समय जितना आप खुद को बेहतर समझते हैं उतना बेहतर लोगों के नजरों के सामने भी रहे ताकि आपके बुरे वक्त में वह आपका साथ दे सकें, इतना ध्यान दें कि दुख का मार्ग हमेशा सुख के मार्ग को जोड़ें रखता है। ऐसा नहीं है कि हमेशा दुख के रास्तों में केवल आपको मुश्किलें और निराशा हाथ में आएंगी। उसके आगे आपके जीवन में सुख ही सुख है, इसका आभास आपको आने वाले समय में पता चलता है।

आज आप मेहनत कर रहे हो लेकिन यह मानसिकता रखे हो कि कल मुझे काफी कुछ मिलेगा तो आप अपने जीवन में सही राह पर हो अगर आप यह सोचते हैं कि मुझे काफी कुछ मिलेगा और मेहनत भी नहीं कर रहे हो, तो आप अपनी राह पर गलत चल रहे हो क्योंकि मानसिकता ही आप की राह तय करती है। आपकी मानसिकता अगर सकारात्मक है तो इसका मतलब है। आप सही दिशा में अपना कदम बढ़ा रहे है। इसमें आपको बस यही सोच रखना है कि भले इस राह में मुझे कितनी भी मुश्किलों का सामना करना पड़े, मैं करूंगा और अपने लक्ष्य तक पहुंचूगा। यही मानसिकता आपको एक सफल व्यक्ति के रूप में लोगों के सामने पेश करता है।

आप कभी निराश न रहे हैं यह सोच कर कि मुश्किलें सिर्फ खुद के जीवन में इतनी क्यों है? आप यह जरूर सोचोगे कि आज के वक्त "मैं अपनी तरफ से सब कुछ कर रहा हूं लेकिन समस्याएं मेरा पीछा नहीं छोड़ रही" लेकिन यह बात अपने जहन से निकाल दें आपका समय आपकी परीक्षा लेता है मुश्किलें हर किसी के जीवन में रहती है, जब श्री कृष्ण, पांडव और महाभारत के सभी पात्र मुश्किलों से घिरे रहे तो आप क्या चीज हैं? मुश्किलों से लड़ना और मुश्किलों से भागना यह आपकी सहनशक्ति और आपके

व्यक्तित्व को दर्शाता है और यही आपके भविष्य का परिणाम बनता है।

आपकी प्रतिभा

आपकी प्रतिभा एक तरह से प्रकृति के द्वारा दिया गया उपहार है, आपके संगत का परिणाम है, आपकी प्रतिभा आपके अंदर ही मौजूद होती हैं, आप इसे किस तरह प्रयोग करते हैं, यह आप पर निर्भर करता है। हर व्यक्ति अपने जन्म के साथ प्रतिभा लेकर नहीं आता है, समय के साथ उसे अपनी प्रतिभा को पहचानने के अवश्यकता होती है और अपने प्रतिभा को आप दुनिया के सामने किस तरह पेश करते हैं, यह भी पूरी तरह आप पर निर्भर करता है। आज के दौर में केवल आपकी प्रतिभा ही आपकी असली पहचान है, आपकी योग्यता के अनुसार ही आपको समाज में इज्जत और नाम मिलता है।

प्रतिभा हर मनुष्य के अंदर तो होती ही है लेकिन उसे भाप पाना वह भी सही समय पर यह आप की सबसे बड़ी परीक्षा होती है। मनुष्य अपने जीवन में हर एक उम्र से गुजरता है, सही उम्र में अगर उसे अपनी योग्यता का अनुभव हो जाता है कि मैं क्या कर

सकता हूं? और मेरे अंदर क्या करने की काबिलियत है? वह व्यक्ति अपने समय अनुसार रणनीति तय करने में कामयाब हो जाता है और अपना सही कदम सही राह की ओर बढ़ाता है। आपकी प्रतिभा आपके अंदर ही है लेकिन उसे उभार कर अपने अंदर से बाहर दिखाना, यह आपकी सबसे अहम घड़ी होती है।

आपके कर्म के अनुसार आपकी प्रतिभा में वृद्धि होती है, अगर आपका कर्म सही दिशा में होगा तो आपकी प्रतिभा दिन दुगनी बढ़ेगी। दूसरी तरफ अगर आप का कर्म गलत दिशा में होगा तो आपकी प्रतिभा व्यर्थ जाएगी, जो काम मुश्किल है, उसी काम को करना प्रतिभा की निशानी है यह हमेशा आपके कर्म के अनुसार बढ़ती या घटती रहती है। यह पूरी तरह आपके मानसिकता पर निर्भर रहती है, जैसा आप सोचोगे वैसा ही आपको फल मिलता है।

समाप्त